गैरसैंण, सोमवार
29 सितम्बर 2025
वर्ष: 17
अंक: 143 पृष्ठ: 4
मूल्य: 2.00

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

जूना अखाड़े के डॉ. स्वामी उमाकांतानंद ने की राष्ट्रपति मुर्मु से शिष्टाचार भेंट

हरिद्वार। श्रीदशनाम जूना अखाड़े के वरिष्ठ महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकांतानंद सरस्वती ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से शिष्टाचार भेंट की। स्वामी उमाकांतानंद ने राष्ट्रपति को भगवान श्रीराम का चित्र स्मृति चिह्न स्वरूप प्रदान किया। राष्ट्रपति ने कहा कि डॉ. स्वामी ऐसे शिष्यों को तैयार करें जो गांव-गांव जाकर गरीब बस्तियों में जागरूकता अभियान चलाएं और वहीं रहकर समाज सेवा करें। तभी समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का वास्तविक विकास संभव है। इस दौरान भाजपा के पूर्व राज्यसभा सांसद एवं वर्तमान एससी एसटी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष समीर उरांव, वरिष्ठ भाजपा नेता राकेश भास्कर, शाश्वतम् परिवार हरिद्वार के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. जितेंद्र सिंह, वैद्य दीपक कुमार आदि मौजूद रहे।

वाहन अनियंत्रित होकर खाई मे गिरा, चालक की मौत

बागेश्वर। कपकोट पुलिस क्षेत्र के अंतर्गत शनिवार की रात एक वाहन अनियंत्रित होकर 100 मीटर खाई में गिर गया। इस हादसे में चालक की मौत हो गई। सूचना के बाद पहुंची पुलिस ने शव को खाई से बहार निकाला और पंचनामा भरा। पोस्टमार्टम के लिए शव जिला मुखयालय भेजा। रविवार को पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 54 वर्षीय कविंद्र सिंह पुतलिया पुत्र भवान सिंह निवासी मल्ला देश शनिवार को वाहन संख्या यूके-02-ए- 0272 से जा रहे थे। घर पहुंचने से पहले अचानक वाहन अनियंत्रित होकर करीब 100 फीट गहरी खाई में जा गिरा। हादसे में चालक की मौत हो गई। हादसे के वक्त वाहन में और कोई नहीं था। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची शव को खाई से बाहर निकालकर पंचनामा भर शव को जिला अस्पताल पहुंचाया। रविवार को शव का पीएम कराकर परिजनों को सौंप दिया। ग्रामीणों का कहना है कि जहां वाहन गिरा वहां सड़क टूटी थी। यही हादसे का मुख्य कारण है। मामले की जांच की मांग की है। मृतक के दो छोटे बच्चे हैं।

युवक पर तीन आरोपियों ने चाकू और डंडों से किया हमला, केस दर्ज

रुड़की। कस्बे के पठानपुरा मोहल्ले में तीन आरोपियों ने एक युवक पर जानलेवा हमला कर दिया। इस हमले में पीड़ित को गंभीर चोटें आईं है और उन्हें सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। पीड़ित ने मंगलौर कोतवाली में तहरीर देकर हमलावरों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दी है। जुल्फकार निवासी मौहल्ला पठानपुरा ने तहरीर देकर बताया कि 22 सितंबर को रात करीब 8:30 बजे, जब वह अपने घर से बाहर निकले तभी बाग के सामने तीन युवकों ने उन्हें घेर लिया। आरोपियों ने गाली-गलौज करते हुए चाकू व डंडों से उन पर हमला कर दिया। जिसमे वह घायल हो गया। जुल्फकार ने बताया हमलावरों में से एक युवक की पहचान सोनू निवासी मोहल्ला किला मंगलौर के रूप में हुई है। इंस्पेक्टर अमरजीत सिंह ने बताया कि तहरीर के आधार पर सोनू निवासी मोहल्ला किला समेत दो अज्ञात आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

बिजली पोल पर काम कर युवक गिरा, उपचार के दौरान मौत

रुड़की। बिजली पोल पर काम करते समय एक युवक गिर गया। जिससे युवक को गंभीर रुप से घायल हो गया। युवक को उपचार के लिए करौंदी स्थित एक अस्पताल में लाया गया। जहां शनिवार को उपचार के दौरान युवक की मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराया है। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के गदेहड़ी गांव थाना-फतेहपुर निवासी 22 वर्षीय सुमित कुमार झबरेड़ा के कोटवाल गांव में रह रहा था। वह एक बिजली ठेकेदार के पास काम करता था। शनिवार को वह कोटवाल के समीप बिजली के पोल पर काम कर रहा था। उसी दौरान अचानक ही वह पोल से नीचे गिर गया। उसको गंभीर चोट आई। उपचार के लिए उसे करौंदी स्थित एक अस्पताल ले जाया गया। जहां उपचार के दौरान युवक की मौत हो गई। युवक के चार भाई, एक बहन है।

भारत बना एशिया कप चैंपियन

टीम इंडिया के सामने पाकिस्तान चारों खाने चित्त

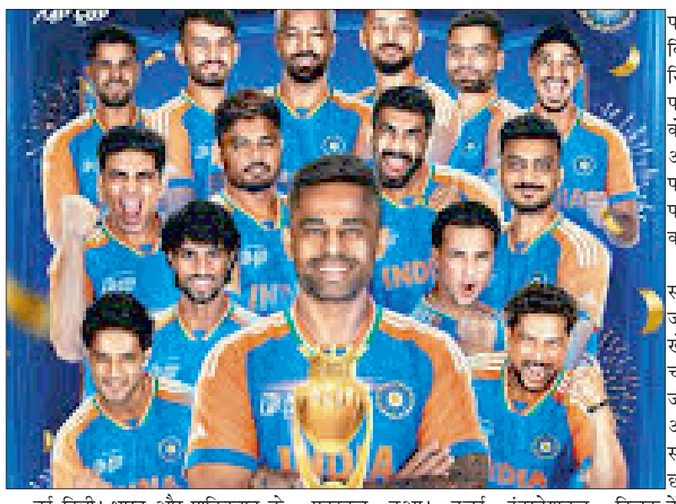

नई दिल्ली। भारत और पाकिस्तान के बीच फाइनल मैच को जैसा होना चाहिए ठीक वैसा ही एशिया कप-2025 का फाइनल हुआ। दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में रविवार को खेले गए इस खिताबी मुकाबले में रोमांच अपने चरम पर था। अंत में भारत ने पांच विकेट से ने बाजी मारी और खिताब अपने नाम किया। पाकिस्तानी टीम अच्छी शुरुआत के बाद बड़ा स्कोर नहीं कर पाई और 19.1 ओवरों में 146 रनों पर ढेर गई। टीम इंडिया दो गेंद पहले पांच विकेट खोकर हासिल कर लिया।

पाकिस्तान की तरफ से साहिबजादा फरहान ने अर्धशतक जमाते हुए 57 रनों की पारी खेली। अपनी पारी में उन्होंने पांच चौके और तीन छक्के मारे। फखर जमां ने 46 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में 35 गेंदों का सामना कर दो चौके और इतने ही छक्के मारे। भारत की तरफ से तिलक ने नाबाद 69 रनों की पारी खेली। भारत की इस एशिया कप में पाकिस्तान पर लगातार तीसरी जीत है।

करूर भगदड़ मामला : 10 बच्चों सहित अब तक 38 लोगों की मौत की पुष्टि

चेन्नई ,तमिलनाडु के करूर में हुई भदगड़ की घटना में अब तक 38 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। तमिलनाडु के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) जी. वेंकटरमन ने बताया कि मरने वालों में 12 पुरुष, 16 महिलाएं, 5 लड़के और 5 बच्चियां, यानी कुल 10 बच्चे शामिल हैं। डीजीपी जी वेंकटरमन ने करूर घटना के बारे में मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। उन्होंने कहा कि घटना के बाद हमने तत्काल कार्रवाई करते हुए अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक डेविडसन के नेतृत्व में 3 पुलिस महानिरीक्षकों, 2 पुलिस उपमहानिरीक्षकों और 10 पुलिस अधीक्षकों समेत 2000 पुलिसकर्मियों को तैनात किया।

उन्होंने बताया कि तमिलगा वेत्री कझगम (टीवीके) के पिछले कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए उनके अनुरोध पर कार्यक्रम स्थल आवंटित किया गया था। हालांकि उन्हें लगभग 10 हजार लोगों के आने की उम्मीद थी, लेकिन लगभग 27 हजार लोग इकट्ठा हुए। विजय के अभियान के दौरान सुरक्षा के लिए 500 पुलिसकर्मी तैनात थे।

मुख्यमंत्री धामी ने "मन की बात" का 126वां एपिसोड सुना

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को पार्वती प्रेमा जगाती सरस्वती विहार मैदान, वीरभट्टी, नैनीताल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात का 126वां एपिसोड सुना। मुख्यमंत्री ने कहा यह कार्यक्रम देश को नई सोच और सकारात्मक दिशा देने वाला है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में माध्यम से समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को जोड़ने का काम किया है। जनहित में कार्य कर रहे लोगों की मेहनत और लगन को उन्होंने जन-जन तक पहुंचा है। मुख्यमंत्री ने कहा प्रधानमंत्री ने इस कार्यक्रम में नारी-शक्ति का सम्मान करने और स्वदेशी को अपनाने का संकल्प लेने की बात कही।मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने 2 अक्टूबर गांधी जयंती पर खादी और स्वदेशी अपनाने का भी आह्वान किया है। प्रधानमंत्री ने लोगों से आग्रह किया कि 2 अक्टूबर को कोई न कोई खादी उत्पाद अवश्य खरीदें और सोशल मीडिया पर #श्ङ्क'ङ्ग१छङ्क' के साथ साझा करें। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से भी इस मुहिम में अपना सहयोग देने का आग्रह किया।मुख्यमंत्री ने कहा प्रधानमंत्री ने भारत की उन बेटियों का मान बढ़ाया, जिन्होंने नाविका सागर परिक्रमा जैसी कठिन 47,500 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर नया इतिहास रचा है। प्रधानमंत्री ने लोकल उत्पादों के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देने की भी बात कही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने विकसित भारत के सपने को पूरे करने के लिए सभी के सामने जो संकल्प रखें हैं, उन्हें हम सबने मिलकर पूरा करना है।इस अवसर पर डोमेश्वर साहू, प्रांत प्रचारक डॉ. शैलेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह भंडारी, विधायक नैनीताल सरिता आर्य, विधायक भीमताल राम सिंह कैड़ा, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रताप बिष्ट, दायित्वधारी डॉ अनिल डब्बू, शांति माहरा, आयुक्त कुमाऊँ दीपक रावत, आईजी कुमाऊँ रिद्धिम अग्रवाल, जिलाधिकारी वंदना एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

लव मैरिज के बाद सामने आया पति का ऐसा पास्ट, पार की क्रूरता की हदें

कई बार हुआ गर्भपात

देहरादून । रायपुर क्षेत्र की एक महिला ने अपने पति पर दहेज के लिए ताने देने व बिना कारण उसे छोड़कर कहीं और रहने का आरोप लगाया है। महिला की तहरीर पर रायपुर पुलिस ने आरोपित पति के खिलाफ क्रूरता और घरेलू हिंसा का मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस को दी गई तहरीर में महिला ने बताया कि अवनीश नामक व्यक्ति से उसकी पहली मुलाकात मार्च 2017 में हुई थी।

धीरे-धीरे उनकी दोस्ती बढ़ी और यह प्यार में बदल गई। अवनीश ने जुलाई 2018 में शारीरिक संबंध बनाने का दबाव बनाया और जल्दी शादी करने का वादा किया। उस समय वह 12वीं कक्षा में पढ़ रही थी। महिला ने बताया कि अक्टूबर 2019 में उनके रिश्ते के बारे में सबको पता चल गया। इसी दौरान अवनीश का ट्रांसफर मध्य प्रदेश हो गया। दोनों ने कोर्ट मैरिज करने का निर्णय लिया। कुछ समय बाद अवनीश की पुरानी महिला मित्र ने उससे संपर्क किया और कहा कि अवनीश जैसा दिखता है, वैसा है नहीं। जब महिला ने इस बारे में अवनीश से बात की, तो उसने विश्वास दिलाया कि यह सब झूठ है। 9 दिसंबर 2019 को कोर्ट मैरिज के बाद उन्हें सर्टिफिकेट मिला और अगले दिन वह अवनीश के साथ मध्य प्रदेश चली गई।

महिला ने बताया कि शुरुआत में अवनीश का व्यवहार ठीक था, लेकिन धीरे-धीरे उसने देर रात तक बाहर रहना और फोन उठाना बंद कर दिया। जनवरी 2021 में जब वह देहरादून आई, तो चिकित्सक ने बताया कि वह गर्भवती है। कुछ दिन बाद अवनीश उसे दिल्ली ले गया, जहां उसका गर्भपात हो गया।

सितंबर 2022 में उन्होंने देहरादून शिफ्ट होने का निर्णय लिया, लेकिन अवनीश ने उससे दूरी बनानी शुरू कर दी और ताने मारने लगा, जिससे वह तनाव में आ गई। इसी दौरान वह दोबारा गर्भवती हुई, लेकिन तनाव के कारण उसका दूसरा गर्भपात हो गया। जनवरी 2023 में वह तीसरी बार गर्भवती हुई, लेकिन फिर उसका गर्भपात हो गया। इसके बाद अवनीश गोरखपुर शिफ्ट हो गया और गर्मी का बहाना बनाकर उसे देहरादून छोड़ दिया। महिला ने बताया कि दिसंबर 2024 में उसका कार से एक्सीडेंट हुआ, लेकिन अवनीश ने उसकी एक बार भी कुशलक्षेम नहीं पूछी। जनवरी 2025 से उसने फोन करना और उसके मैसेज का जवाब देना भी बंद कर दिया। थानाध्यक्ष रायपुर गिरीश नेगी ने बताया कि तहरीर के आधार पर अवनीश के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

जिगर के टुकड़े को तालाब में फेंक मां ने लगा ली फांसी, दोनों की मौत

टीकमगढ़ ,मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। एक कलयुगी मां ने अपने जिगर के टुकड़े को तालाब में फेंक कर खुद भी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना की सूचना पर पुलिस पहुंची और दोनों को शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भिजवा दिया है। घटना के कारणों का खुलासा नहीं हुआ है। दरअसल घटना जिले के बल्देवगढ़ थाना क्षेत्र के केलपुरा गांव की है, जहां मासूम बच्चे को तालाब में फेंककर कलयुगी मां ने समीप के पेड़ पर फांसी लगाकर अपनी भी जान दे दी। पुलिस ने बच्चे का शव तालाब से निकाला और मृतक महिला संतोषी राजपूत के शव को पेड़ से उतारकर पीएम के लिए बल्देवगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवा दिया है। बताया जाता है कि परिवारिक विवाद के चलते महिला ने आत्मघाती कदम उठाया है। फिलहाल बल्देवगढ़ थाना पुलिस मामले की जांच में जुटी है। महिला के घर में और कौन कौन सदस्य है इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है।

उत्तराखण्ड में तपिश बढ़ी, लेकिन इन पांच जिलों में बारिश के आसार

देहरादून। उत्तराखंड में पहाड़ से मैदान तक चटख धूप खिल रही है और पारा तेजी से चढ़ रहा है। दून में लगातार तपिश बढ़ रही है और पारा सामान्य से पांच डिग्री सेल्सियस अधिक बना हुआ है।

मौसम विभाग के अनुसार, अगले कुछ दिन दून समेत मैदानी क्षेत्रों में मौसम शुष्क बना रह सकता है। पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं-कहीं हल्की बूंदाबांदी के आसार हैं।

दून में रविवार को सुबह से ही चटख धूप खिली रही। जिससे दोपहर में भीषण गर्मी महसूस की गई। दून का अधिकतम तापमान इस माह का सर्वाधिक रिकार्ड किया गया। इसके अलावा ज्यादातर मैदानी क्षेत्रों में पारा 35 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया है। जिससे झुलसाने वाली गर्मी महसूस की जा रही है। वहीं, न्यूनतम तापमान भी सामान्य से अधिक है। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, सोमवार उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर और पिथौरागढ़ में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। आसपास के क्षेत्रों में भी आंशिक बादल मंडराने की आशंका है। वहीं, मैदानी क्षेत्रों में मौसम शुष्क बना रहने और पारे में वृद्धि के आसार हैं।

महाराष्ट्र के मराठवाड़ा में भारी बारिश, धाराशिव में दो की मौत, रेड अलर्ट जारी

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा में रविवार को भारी बारिश के बीच 11,500 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। क्षेत्र के धाराशिव जिले में बारिश से संबंधित घटनाओं के कारण दो लोगों की मौत हो गई है। छत्रपति संभाजीनगर में 24 घंटे में सबसे अधिक 196 मिमी बारिश हरसुल सर्कल में दर्ज की गई, जबकि वैजापुर तालुका के शिवूर और बोरसर सर्कल में 189.25 मिमी बारिश हुई है।

सीएम फडणवीस ने की समीक्षा बैठक

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बाढ़ की स्थिति की रविवार को विस्तृत समीक्षा की और प्रशासन को मराठवाड़ा क्षेत्र में जारी भारी वर्षा के बीच नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए राहत और बचाव अभियान तेज करने का निर्देश दिया। छत्रपति संभाजीनगर, बीड, हिंगोली, जालना, लातूर, नांदेड़, धाराशिव, परभणी और सोलापुर जिलों के कलेक्टर इस बैठक में शामिल हुए।

संभाजीनगर और नांदेड़ जिलों में स्थिति गंभीर

अधिकारियों ने बताया कि जयकवाड़ी बांध से पानी छोड़े जाने के कारण गोदावरी नदी में जलस्तर बढ़ने के बाद, विशेषकर छत्रपति संभाजीनगर और नांदेड़ जिलों में स्थिति गंभीर हो गई है। निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। जयकवाड़ी बांध के सभी 27 गेट खोल दिए गए हैं। स्थिति और भी बिगड़ सकती है क्योंकि गोदावरी नदी के ऊपरी हिस्से में स्थित नासिक में भारी बारिश हो रही है।

मौसम विभाग ने रेड अलर्ट जारी किया

मौसम विभाग ने रविवार और सोमवार को जिले में भारी से बहुत भारी बारिश की भविष्यवाणी करते हुए 'रेड अलर्ट' जारी किया है। अधिकारियों ने बीड जिले में बाढ़ के बारे में लोगों को 'दवंडी' (ढोल बजाकर विशेष घोषणा) से सचेत किया है। सेना और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) की टीमों को भी तैयार रखा गया है।

आज से ग्रामीण क्षेत्रों में पांच घंटे तक की बिजली कटौती होगी

हरिद्वार। ऊर्जा निगम सोमवार से उपसंस्थान सहदेवपुर, गौरीशंकर, ट्रांसपोर्ट नगर और गैंडीखाता के विभिन्न फीडरों पर मरम्मत के काम शुरू करेगा। मरम्मत काम के लिए दिन में पांच घंटे तक की बिजली कटौती होगी। त्योहारों के दौरान बिजली की कटौती से करीब 70 हजार की ग्रामीण आबादी प्रभावित रहेगी। साथ ही कारोबारियों को नुकसान होगा।

वहीं, लोगों को पानी की किल्लत से जूझना पड़ेगा। सोमवार से ऊर्जा निगम ग्रामीण क्षेत्र के उपसंस्थान सहदेवपुर के हरि आश्रय फीडर पर टीएमपीओ स्थापित करने का काम करेगा। साथ ही उपसंस्थान ट्रांसपोर्ट नगर के सराय फीडर पर एएएसी कवर्ड कंडक्टर के मरम्मत काम होंगे। मरम्मत काम के लिए हरि आश्रय फीडर 29 सितंबर, तीन और पांच अक्तूबर को बंद रहेगा।

संघ की प्रार्थना में मंत्र का सामर्थ्य — डॉ. मोहन भागवत

नागपुर ,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि संघ की प्रार्थना सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि सामूहिक संकल्प और भाव का प्रतीक है। 1939 से स्वयंसेवक रोज शाखा में इस प्रार्थना का उच्चारण कर रहे हैं। इतने वर्षों की साधना से इसमें मंत्र जैसी शक्ति आ चुकी है। यह केवल कहने की बात नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव का विषय है।

सरसंघचालक ने कहा कि संघ की प्रार्थना संपूर्ण हिन्दू समाज के ध्येय को व्यक्त करती है। इसमें पहला नमस्कार भारत माता को है, उसके बाद ईश्वर को। इसमें भारत माता से कुछ मांगा नहीं गया, बल्कि उनकी सेवा और राष्ट्र के वैभव की प्रतिज्ञा की गई है। मांगा गया है तो ईश्वर से शक्ति, भक्ति और समर्पण।

उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रार्थना केवल शब्दों और अर्थ का मेल नहीं है, बल्कि उससे भारत माता के प्रति प्रेम और भक्ति झलकती है। यही भाव इसे मंत्र का सामर्थ्य देता है।

मोहन भागवत ने बताया कि शाखा में छोटे-छोटे बाल और शिशु स्वयंसेवक भी प्रार्थना के समय ध्यान और अनुशासन से खड़े रहते हैं। भले ही उन्हें शब्दों का अर्थ न समझ में आए, लेकिन भाव का असर उन पर होता है। उन्होंने कहा, किसी भी शाखा में सबसे चंचल बाल स्वयंसेवक भी प्रार्थना के समय पूरी तन्मयता से खड़ा रहता है। यह भाव की शक्ति है, जिसके लिए किसी विद्वत्ता की जरूरत नहीं होती।

डॉ. भागवत ने कहा कि संघ का विश्वास है कि जब पूरा हिंदू समाज अपनी शक्ति का योगदान देगा, तभी भारत माता परम वैभव तक पहुंचेगी। इसके लिए पहले भाव, फिर अर्थ और उसके बाद शब्द की दिशा में बढ़ना होगा। लेकिन अगर गति तेज करनी है, तो शब्द से अर्थ और अर्थ से भाव की ओर भी जाना होगा।

उन्होंने कहा कि शब्द, अर्थ और भाव, ये तीनों का सामंजस्य संगीत में कम ही देखने को मिलता है। उन्होंने कहा, जब मैंने पहली बार यह ट्रैक सुना तो तुरंत महसूस हुआ कि यह प्रार्थना को एक विशेष वातावरण में ले जाता है। उन्होंने बताया कि इसका निर्माण इंग्लैंड की भूमि पर हुआ, जो अपने आप में विशेष है। इस अवसर पर हरीश भिमानी ने भावुक होकर कहा कि आज का दिन उनके लिए अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा, भारत माता सबसे महत्वपूर्ण देवी हैं, जिनका मंदिर कहीं नहीं है।

मन की बात : पीएम मोदी का छठ को वैश्विक पहचान दिलाने का संकल्प

गांधी जयंती पर की 'स्वदेशी अपनाने की अपील

नई दिल्ली , प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बातझ् के 126वें एपिसोड के जरिए देश को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने भारत के महापर्व छठ को यूनेस्को की सूची में शामिल कराने के संकल्प से लेकर गांधी जयंती पर खादी और स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का आह्वान किया। साथ ही, उन्होंने नारी शक्ति के पराक्रम और आत्मनिर्भर भारत की प्रेरक कहानियों की भी सराहना की।

पीएम मोदी ने इस बात पर खुशी जताई कि भारत सरकार अब छठ महापर्व को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल कराने के लिए प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा, जब छठ पूजा को यूनेस्को की सूची में जगह मिल जाएगी, तो दुनिया के कोने-कोने में लोग इसकी भव्यता और दिव्यता का अनुभव कर पाएंगे। पीएम ने याद दिलाया कि सरकार के ऐसे ही प्रयासों से कुछ समय पहले कोलकाता की दुर्गा पूजा को भी यह वैश्विक सम्मान प्राप्त हुआ था। उन्होंने कहा कि छठ अब केवल देश का ही नहीं, बल्कि एक वैश्विक त्योहार बन रहा है। प्रधानमंत्री ने 'स्वर कोकिला लता मंगेशकर को उनकी जयंती पर भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें याद किया। उन्होंने कहा कि लता दीदी के देशभक्ति गीत आज भी प्रेरणा देते हैं और वह हर साल उन्हें राखी भेजना कभी नहीं भूलती थीं। इसी क्रम में उन्होंने 2 अक्टूबर, गांधी जयंती का जिक्र करते हुए देशवासियों से 'स्वदेशीझ् और खादी अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, पिछले 11 सालों में खादी की बिक्री में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। मैं आप सभी से अपील करता हूं कि 2 अक्टूबर को कुछ न कुछ खादी उत्पाद जरूर खरीदें और सोशल मीडिया पर गर्व से शेयर करें।

पीएम मोदी ने भारतीय नौसेना की दो महिला अधिकारियों, लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा की 'नाविका सागर परिक्रमाझ् के दौरान दिखाए गए अदम्य साहस की प्रशंसा की। इसके अलावा, उन्होंने देश के उन उद्यमियों की कहानियां भी साझा कीं जो परंपरा और इनोवेशन को मिलाकर आत्मनिर्भर भारत की नई गाथा लिख रहे हैं।

उन्होंने बताया कि कैसे अशोक जगदीसन और प्रेम सेल्वराज ने कॉर्पोरेट नौकरी छोड़कर केले के रेशों से योगा मैट बनाए और 200 परिवारों को रोजगार दिया। वहीं, आशीष सत्यव्रत साहू ने 'जोहरग्राम ब्रांड के जरिए आदिवासी वस्त्रों को वैश्विक मंच तक पहुंचाया है, और मधुबनी की स्वीटी कुमारी ने मिथिला पेंटिंग के माध्यम से 500 से अधिक ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है।

सड़क हादसे में घायल पंजाबी गायक राजवीर जवंदा की हालत नाजुक

मोहाली ,। हरियाणा के पिंजौर में एक सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हुए प्रसिद्ध पंजाबी गायक राजवीर जवंदा की हालत अभी भी नाजुक बनी हुई है। उन्हें शनिवार से मोहाली के फोर्टिस अस्पताल में एडवांस लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर रखा गया है। डॉक्टरों के मुताबिक, उनकी स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आया है और अगले 24 घंटे बेहद महत्वपूर्ण हैं। फोर्टिस अस्पताल के डॉक्टरों ने बताया कि हादसे के बाद जवंदा को जिस गंभीर हालत में लाया गया था, वह वैसी ही बनी हुई है। हालांकि, उनका ब्लड प्रेशर स्थिर है। डॉक्टरों की एक टीम लगातार उनके स्वास्थ्य की निगरानी कर रही है। जानकारी के अनुसार, राजवीर जवंदा अपने चार दोस्तों के साथ मोटरसाइकिल पर राइड के लिए निकले थे। पिंजौर के पास उनकी बाइक के सामने अचानक एक आवारा पशु आ गया, जिससे बाइक का संतुलन बिगड़ गया और वह सड़क पर गिर पड़े। हादसे में उनके सिर पर गंभीर चोटें आई हैं। बताया जा रहा है कि मोहाली अस्पताल लाने से पहले उन्हें कार्डियक अरेस्ट भी आया था।

कपिल शर्मा को धमकी देने वाला गिरफ्तार

मुंबई क्राइम ब्रांच ने कोलकाता से दबोचा, मांगी थी 1 करोड़ की फिरौती

कोलकाता , मशहूर कॉमेडियन और अभिनेता कपिल शर्मा को मेल के जरिए जान से मारने की धमकी और 1 करोड़ रुपए की फिरौती हाल में ही मांगी गई थी। मुंबई क्राइम ब्रांच ने धमकी देने वाले शख्स को पश्चिम बंगाल के 24 परगना से गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए शख्स की पहचान दिलीप चौधरी के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, दिलीप चौधरी खुद को गैंगस्टर गोल्डी बरार और रोहित गोदारा गैंग का मेंबर बताकर कपिल शर्मा को मेल भेजकर 1 करोड़ रुपए की फिरौती मांग रहा था। पुलिस के अनुसार मुंबई क्राइम ब्रांच ने बड़ी कार्रवाई करते हुए पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता से एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। उसकी पहचान दिलीप चौधरी के रूप में हुई है।

सम्पादकीय

राजनीतिक भंवर में परीक्षा प्रकरण

उत्तराखंड में एक सप्ताह पूर्व हुई स्नातक स्तरीय परीक्षा में भले ही कुछ लोगों की गिरफ्तारी हुई हो लेकिन इस प्रकरण को लेकर राजनीति का ग्राफ अब लगातार ऊपर उठ रहा है। इधर भारतीय जनता पार्टी ने अपने सभी विधायकों को मैदान में उतार दिया है जो कि अपने–अपने क्षेत्र में परीक्षाओं को लेकर सभी बातें सही होने का दावा करते फिर रहे हैं। हालांकि दूसरी तरफ कांग्रेस भी परीक्षाओं में धांधली को लेकर मुखर है और अब सरकार के पुतले फूंकने का काम कर रही है तो अब कांग्रेस ने परीक्षा निरस्त होने और सीबीआई जांच न होने की स्थिति में बड़े आंदोलन का ऐलान कर दिया है। यानी की स्पष्ट है कि यह प्रकरण अब सरकार के गले की फांस बन चुका है और अब तक किए गए सभी प्रयास छात्रों को मनाने में असफल साबित हुए हैं। इसी कड़ी में निर्दलीय विधायक खानपुर भी कूद पड़े हैं और उन्होंने पूरी परीक्षा प्रणाली की जांच के लिए सीबीआई जांच की तो मांग की ही है साथ ही विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने के लिए भी पत्र भेजा है। आने वाले दिनों में यह प्रकरण उत्तराखंड की राजनीति में काफी हंगामा पैदा करने वाला है तो वहीं दूसरी तरफ सरकार के मुखिया अभी भी खुद को युवाओं के साथ बात कर नकल माफियाओं पर नकल लगाने की बात कर रहे हैं। यह तो स्पष्ट है कि उत्तराखंड की परीक्षा प्रणालियों को लेकर प्रदेश का युवा भ्रम की स्थिति में है और अब उसे यह लगने लगा है कि राज्य सरकार और आयोग किसी भी परीक्षा को निर्विवाद संपन्न कराने की स्थिति में नहीं है। सरकार के लिए युवाओं में पनपती यह सोच अच्छा संकेत नहीं है खास तौर से उन परिस्थितियों में जबकि 2027 में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। कहीं ऐसा ना हो कि युवाओं और उनके अभिभावकों का यह रोष सरकार की तिगड़ी बनने से पहले ही उसे मैदान से बाहर कर दें। मुख्यमंत्री को तत्काल अपनी छवि के अनुरूप फैसला अब ले ही लेना चाहिए।

राहुल गांधी की गलत धारणा

भारत निर्वाचन आयोग ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के वोटचोरी के आरोप को खारिज कर दिया। अपनी पोस्ट में आयोग ने लिखा, किसी भी वोट को ऑनलाइन किसी शख्स द्वारा हटाया नहीं जा सकता, जैसा कि गांधी ने गलत धारणा बना रखी है। अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गांधी ने आरोप लगाया था कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार वोट चोरों को संरक्षण दे रहे हैं और फर्जी मतदाताओं को घटाने/जोड़ने में होने वाली धोखाधड़ी की उन्हें पूरी जानकारी है। गांधी ने कर्नाटक के अलंद विधानसभा क्षेत्र में कम से कम छह हजार वोट हटाने व महादेवपुरा में कुछ इसी तरह की धोखधड़ी का आरोप लगाया था। उनके अनुसार सॉफ्टवेयर का प्रयोग कर असली मतदाताओं का रूप लिया गया। गांधी ने बूथ लेबल के अधिकारी के चाचा का नाम हटाए जाने की भी चर्चा की। कुछ समय से विपक्षी दलों दल दावा करते रहे हैं कि आयोग भाजपा के साथ मिलकर मतदाता सूची से फर्जी वोट हटाने/जोड़ने का काम कर रहा है। चुनाव आयुक्त को लोकतंत्र की हत्या करने वालों से बचाने का आह्वाहन करते हुए गांधी ने कर्नाटक, महाराष्ट्र, हरियाणा व उप्र में बड़े पैमाने पर नाम हटाने का आरोप लगाया। समूचा विपक्ष एक सुर में यही कह रहा है। आयोग के नमूना मांगने के जवाब में राहुल ने इस दफा सौ फीसद प्रमाण की बात भी की। पूर्व में मतदाता सूचियों की खामियां तो स्पष्ट नजर आई हैं मगर मतदान में किसी तरह के हेर-फेर के सटीक प्रमाण नहीं मिले। आरोप निराधार नहीं हैं तो इन्हें खतरे की घंटी तो माना ही जाना चाहिए। आयोग को कीचड़ उछालने की बजाय अपनी खामियों को सुधारने के प्रति पारदर्शितापूर्ण कदम उठाते नजर आना चाहिए।

व्यापार में सुगमता बढ़ाने से अभूतपूर्व निवेश आकर्षित हो सकता है

डॉ. सौम्य कांति घोष

हाल ही में वैश्विक रेटिंग एजेंसियों ने भारत पर भरोसा दोहराया है। यह भरोसा भारत की अर्थव्यवस्था की उस मजबूत संरचना को साबित करता है, जो पिछले कुछ वर्षों में कठिन मेहनत से तैयार की गई है। इससे व्यापार को लेकर उठने वाला संदेह और शोर–शराबा भी शांत हुआ है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि संपत्ति का बराबर बंटवारा हो और सभी को समान अवसर मिलें, सरकार ने एण्डक्यूयूओटी;बारबेल रणनीति एण्डक्यूयूओटी; अपनाई है। इसके तहत नीतियों और नियमों में कई तरह के सुधार किए जा रहे हैं, ताकि ईज ऑफ बिज़नेस के अलग–अलग स्तंभ मज़बूत हों। साथ ही, बड़े पैमाने पर औपचारिकीकरण, वित्तीयकरण और तकनीकी एकीकरण को ज़रूरी बनाया गया है।यह निवेश आकर्षित करने और अन्य देशों से कड़ी प्रतिस्पर्धा में आगे निकलने के लिए अनिवार्य है।

महामारी के बाद भू–राजनीतिक हालात ने मैन्युफैक्चरिंग के तरीके बदलने की ज़रूरत पैदा कर दी। इसी के चलते भारत ने एक नई राह पकड़ी है, जहां एण्डक्यूयूओटी;ईज ऑफ एग्ज़िट एण्डक्यूयूओटी; यानी व्यापार से बाहर निकलने की आसानी पर जोर दिया जा रहा है। यह निवेशकों के लिए बहुत अहम है क्योंकि वे पूंजी लगाते समय इस सुविधा को देखते हैं। साल 2000 से अब तक भारत में 1 ट्रिलियन डॉलर से ज़्यादा का एफडीआई आया है, जिसमें सेवाएं, तकनीक और टेलीकॉम जैसे क्षेत्र सबसे ज़्यादा लाभान्वित हुए हैं (वित्त वर्ष 2026 की पहली तिमाही तक ही लगभग 25 अरब डॉलर निवेश आया है)।

जब सेबी विश्वसनीय विदेशी निवेशकों के लिए एकल खिड़की स्वचालित एवं सामान्यीकृत पहुंच (स्वागत–एफआई) लागू करता है, कम जोखिम वाले माने जाने वाले प्रमुख विदेशी निवेशकों के लिए पहुंच को सरल बनाता है, या आरबीआई फेमा दिशानिर्देशों में बहुप्रतीक्षित बदलाव लाता है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में रुपये का उपयोग बढ़ता है, तो अटलांटिक पार से आने वाली हलचलें अविस्मरणीय होती हैं। संस्थागत सुधारों की सफलता आईबीसी, संपत्ति पुनर्निर्माण, इंफ्रा फाइनेंसिंग और बैंकिंग, बीमा व वित्तीय सेवाओं में एण्डक्यूयूओटी;प्लग–एंड–प्लेएण्डक्यूयूओटी; मॉडल के रूप में दिखती है। इन क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का तेज़ी से बढ़ता इस्तेमाल इसे और मज़बूत बना रहा है।

जनसंख्या के पैमाने पर कई नीतिगत कदम उठाए गए हैं, जैसे पीएमएवाई (3.2 करोड़ घरों को मंजूरी), मुद्रा(कुल 52 करोड़ से अधिक खातों में 33.65 लाख करोड़ रुपये मंजूर किए गए, जिसमें 68 प्रतिशत महिला उद्यमी हैं),पीएम–स्वनिधि (96 लाख से अधिक ऋण खातों के माध्यम से 68 लाख से अधिक स्ट्रीट वेंडरों को कवर किया गया), उद्यम (उद्यम सहायता पोर्टल की गणना करते हुए 6.86 करोड़ से अधिक एमएसएमई पंजीकरण), श्रम सुविधा (2018 से 6.63 लाख ईएसआईसी पंजीकरण, 6.49 लाख ईपीएफओ पंजीकरण और फर्मों द्वारा 1.29 लाख अनुबंध श्रमिक पंजीकरण के साथ श्रम और रोजगार पोर्टल का अनुपालन), स्वामित्व (ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एकीकृत आवासीय संपत्ति स्वामित्व समाधान जिसमें 9 3.20 लाख गांवों में ड्रोन सर्वेक्षण पूरा हो चुका है), नक्शा (प्रारंभ में 150 शहरों में पायलट कार्यक्रम के साथ शहरी भूमि पार्सल का व्यापक, जीआईएस–एकीकृत डेटाबेस, जिसे पूरे भारत में 4,912 शहरी स्थानीय निकायों तक विस्तारित किया जाएगा), एसएएससीआई (केन्द्र से राज्यों को पूंजीगत व्यय के लिए 50–वर्षीय ब्याज–मुक्त ऋण) और औपचारिकीकरण भी लगातार बढ़ रहा है। इन सारी योजनाओं ने मिलकर भारत की

महामारी के बाद भू–राजनीतिक हालात ने मैन्युफैक्चरिंग के तरीके बदलने की ज़रूरत पैदा कर दी। इसी के चलते भारत ने एक नई राह पकड़ी है, जहां एण्डक्यूयूओटी;ईज ऑफ एग्ज़िट एण्डक्यूयूओटी; यानी व्यापार से बाहर निकलने की आसानी पर जोर दिया जा रहा है। यह निवेशकों के लिए बहुत अहम है क्योंकि वे पूंजी लगाते समय इस सुविधा को देखते हैं। साल 2000 से अब तक भारत में 1 ट्रिलियन डॉलर से ज़्यादा का एफडीआई आया है, जिसमें सेवाएं, तकनीक और टेलीकॉम जैसे क्षेत्र सबसे ज़्यादा लाभान्वित हुए हैं (वित्त वर्ष 2026 की पहली तिमाही तक ही लगभग 25 अरब डॉलर निवेश आया है)। जब सेबी विश्वसनीय विदेशी निवेशकों के लिए एकल खिड़की स्वचालित एवं सामान्यीकृत पहुंच (स्वागत–एफआई) लागू करता है, कम जोखिम वाले माने जाने वाले प्रमुख विदेशी निवेशकों के लिए पहुंच को सरल बनाता है, या आरबीआई फेमा दिशानिर्देशों में बहुप्रतीक्षित बदलाव लाता है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में रुपये का उपयोग बढ़ता है, तो अटलांटिक पार से आने वाली हलचलें अविस्मरणीय होती हैं। संस्थागत सुधारों की सफलता आईबीसी, संपत्ति पुनर्निर्माण, इंफ्रा फाइनेंसिंग और बैंकिंग, बीमा व वित्तीय सेवाओं में एण्डक्यूयूओटी;प्लग–एंड–प्लेएण्डक्यूयूओटी; मॉडल के रूप में दिखती है।

मेहनत और लचीलापन दोनों को नई ताक़त दी है। इससे पहले शुरू की गई कई योजनाओं को मजबूती मिली है, स्मार्ट सिटी मिशन से लेकर हर घर जल, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (पीएमजीकेवाई), पीएम किसान सम्मान निधि से लेकर आयुष्मान भारत योजना तक। इन योजनाओं का असर सिफ़ आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि नए निवेश को आगे बढ़ाने और सहारा देने में भी दिख रहा है।2021 से अब तक जीएसटी संग्रह 1.9 गुना बढ़ा है (94 प्रतिशत की वृद्धि), कॉर्पोरेट टैक्स संग्रह 2.2 गुना बढ़ा है (116 प्रतिशत की वृद्धि), इनकम टैक्स वसूली 2.42 गुना बढ़ी है (143 प्रतिशत की वृद्धि), टैक्स देने वालों की संख्या 1.4 गुना (37 प्रतिशत वृद्धि) बढ़ी है, यानी लगभग 2.5 करोड़ नए करदाता जुड़े हैं। खास बात यह है कि निचले वर्ग के करदाता अब धीरे–धीरे ऊंचे स्तर पर पहुंच रहे हैं। इसके अलावा, कंपनियों का मुनाफ़ा (बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं को छोड़कर) 2021 से अब तक 2.4 गुना यानी लगभग 136 प्रतिशत बढ़ा है।

कंपनियों के औपचारिककरण को और बढ़ावा देने के लिए, वित्तीय वर्ष 2023–24 में भारत में 1.85 लाख से अधिक कंपनियाँ बनीं। वहीं, 2024–25 में शुरुआती आंकड़े लगभग 1.63 लाख कंपनियों के पंजीकरण को दिखाते हैं। इसके साथ ही, वर्तमान में रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज(आरओसी) में लगभग 18.5 लाख सक्रिय कंपनियां दर्ज हैं। लेकिन भारत ने करीब 8.5 लाख निष्क्रिय/अप्रचालित कंपनियों को अपने रिकॉर्ड से हटा दिया है। इससे यह साफ़ होता है कि भारत बेनामी और फर्जी कंपनियों को प्रणाली से बाहर करने के लिए प्रतिबद्ध है। मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवाद को वित्तपोषण से रोकने (सीएफटी) के मोर्चे पर भारत के निरंतर प्रयासों की पिछले साल वैश्विक निगरानी संस्था ने सराहना की थी। नवाचार (इनोवेशन) के क्षेत्र में हाल के वर्षों में भारत ने गहरी छाप छोड़ी है। कॉपीराइट, पेटेंट, बौद्धिक संपदा और ट्रेडमार्क के मामले में भारत की वृद्धि दर अब विकसित देशों के बराबर खड़ी है। पश्चिमी देशों का दबदबा अब चीन की वजह से कमजोर हुआ है, क्योंकि चीन के पास महत्वपूर्ण तकनीक और दुर्लभ खनिजों में बढ़त है। ऐसे में हमें इस बेहद अहम क्षेत्र पर खास ध्यान देना होगा और शिक्षा जगत, संस्थानों और उद्योगों के बीच सहयोग का एक गतिशील मॉडल आगे बढ़ाना होगा। गौर करने वाली बात है कि भारत के स्टार्ट–अप्स ने सरकार के सहयोग (अर्थात स्टार्टअप्स के लिए फंड ऑफ फंड्स) और फंडिंग सहायता से अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने अमेरिका में सिलिकॉन वैली बैंक संकट और व्यापार से जुड़ी अनिश्चितताओं के बाद आई च्फंडिंग विंटरज्ञ (निवेश की कमी) से बाहर निकलने में सफलता पाई। कई सफल स्टार्ट–अप्स ने सार्वजनिक निर्गम(पब्लिक ऑफरिंग) के ज़रिए पूंजी बाजार में

प्रवेश किया है। 2014–15 से अब तक मुख्य बोर्ड पर 764 सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ, एफपीओ, ओएफएस आदि) और एसएमई प्लेटफॉर्म पर 1200 से ज़्यादा निर्गम (इस साल तक) हुए हैं। इसने यह साबित किया है कि पूंजी बाज़ार निवेशकों को आसानी से एण्डक्यूयूओटी;एग्ज़िटएण्डक्यूयूओटी; (निवेश से बाहर निकलने) का रास्ता देने में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। पूंजी के इस चक्रीय प्रवाह और उसके गुणक प्रभाव से यह सुनिश्चित होता है कि नई और छोटी कंपनियां भी अपने विकास के अलग–अलग चरणों में फंडिंग तक पहुँच बना सकें। भारत को वैश्विक बॉन्ड सूचकांकों (वर्तमान उभरते बाजारों के सूचकांकों से एक महत्वपूर्ण क्षण) में शामिल करने पर विचार किया जा रहा है, जिसके लिए हमारे ऋण बाजार को नए सिरे से संतुलित करना जरूरी होगा होगा, साथ ही, बहु–आयामी ढांचे (एनआईपी, एनएमपी, पीएम गति शक्ति) के लिए बड़े पैमाने पर फंडिंग की आवश्यकता होगी।इसलिए अब भारतीय निजी कंपनियों को वैश्विक सोच अपनानी होगी, दुनिया भर में ब्रांड इंडिया की मजबूत पहचान बनानी होगी और भारतीय प्रवासी समुदाय की बड़ी प्रतिभा को साथ जोड़कर तेज़ और साझी प्रगति की दिशा में बढ़ना होगा।

गुलामी के आठ सौ साल से उपजी सामूहिक हीन भावनाओं को लेकर चिंता?

अजय दीक्षित

पुरानी बात है लेकिन इस संदर्भ में प्रासंगिक है। एक राजा बहुत क्रूर था और उसका मंत्री उससे भी बदमाश था। राजा का नया महल बन रहा था जबकि राजा एक दूसरे महल में रहता था। दोनों स्थानों के बीच एक नदी थी । मजदूर हजारों की संख्या में उस पुल से निकलकर राजा की बेगारी करने दूसरी ओर जाते थे। मंत्री ने राजा के कहने पर आदेश दिया कि लौटते समय सभी जनता , मजदूरों को जूते लगाए जाएं।

राजा के आदेश का पालन हुआ और पांच सैनिक जूते लगाने तैनात किए। रोज शाम को सभी को घर लौट ने से पहले पांच,पांच जूते खाने पड़ते थे। सभी कुछ सहन हो रहा था।एक दिन राजा ने शराब पी ली और उस स्थान का पुल पर निरीक्षण किया। जनता सब सहन कर रही थी। फिर भी राजा ने एक डिब्बा रख वा दिया कि जनता के कोई सुझाव हो तो वह पर्ची पर लिख कर इस डिब्बे में डाल दें।यह जले पर नमक छिड़कने जैसा था ।कई दिन गुजर गए लेकिन कोई सुझाव नहीं आया तो हरामीज़ादे राजा ने जूते पांच के बजाय दस कर दिए तो एक परेशानी हुई कि मजदूर देर से घर पहुंचने लगे।इस पर एक मजदूर ने आंख बचाकर एक पर्ची डिब्बे में डाल दी।जब राजा को मालूम हुआ कि कोई सुझाव आया है तो उसने डिब्बा खुलवाया और पढ़ा तो उसमें लिखा था कि हजूर जूते लगाने वाले सैनिक बढ़वा दो ।शाम को घर पहुंचने में देर हो जाती है।यह सोच बन गई थी भारत वर्ष की जनता की गुलामी के आठ सौ साल में, हीन भावना उत्पन्न हो गई थी। 1192 से देश में विदेशी शासन ही रहा। पारस की खाड़ी से आए महमूद गजनी ने आक्रमण किया और इंद्रप्रस्थ के राजा पृथ्वी राज चौहान हो हराकर बंदी बना लिया। उसके दिल्ली सल्तनत, मुगल, ब्रिटिश ने राज्य किया ।1947 में ही आजाद हो सका था।कुल 800 साल हम गुलाम रहे ।भारत वर्ष लगभग आठ सौ साल पहले मुस्लिम सल्तनत,मुगल और ब्रिटिश का गुलाम रहा था। इस दौरान देश में एक सामूहिक हीन भावना उत्पन्न हुई और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ जाती रही।इस काल खंड में देश ने अनेक शासनों को झेला। आज भी यही आवाज कई लोगों में यह कह कर निकलती है कि हम इस पचड़े में नहीं पड़ेंगे चाहे कितना भी बड़ा मुद्दा हो लोग आज भी बचना चाहते हैं।इस देश के लोगों ने आजादी के राजनीतिक लोगों, अधिकारियों, आपातकाल, आतंकवाद, भाईभतीजाबाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, नौकरशाही,को झेला है। वह तो भला हो जवाहर लाल नेहरू का जिन्होंने लोकतांत्रिक व्यवस्था को स्थापित कर दिया और जनता को गुप्त मतदान के माध्यम से सरकार बदलने का मौका मिला हुआ है नहीं तो पाकिस्तान में तीन बार संविधान बदल चुका है और सेना प्रमुख जब मर्जी हो तख्तापलट कर देते हैं और जनता तमाशबीन बन कर देखती रहती है।

भारत में कभी क्रांति नहीं हो सकती है क्योंकि हमारी रगों में अजीब सी हीन भावना है। मुस्लिम देशों में सत्ता के लिए रक्तपात किया जाता है।ईरान, इराक, सीरिया लेबनान, लीबिया,उसके उदाहरण हैं।रूस में 1907 में क्रांति हो चुकी है। चीन में माओवाद था और अभी भी है , अफगानिस्तान, म्यांमार, बांग्लादेश,में भी हिंसक क्रांति हो चुकी है।इस के पीछे इन देशों का इतिहास है और वे 800 वर्ष गुलाम नहीं रहे। ब्रिटिश ने जहां जहां शासन किया वे बहुत ही निर्दयता से जनता से व्यवहार करते थे।भारत में उन्होंने खूब लूटपाट की और जनता का हर तरीके का शोषण किया।

जो पीछे छूट गया उसे भूल कर हीन भावना से लोगो को निकलना चाहिए।800 वर्षों की गलमी ने भौतिक विकास, समाज विकास, बुरी तरह से प्रभावित किया था। यद्यपि ब्रिटिश ने भारत को कंगाल कर दिया।1931 में गोल मेज सम्मेलन में गांधीजी ने जॉर्ज पंचम से यही तो कहां था कि मेरे देश की जनता भूखी और कंगाल है और आप मुझसे उम्मीद कर रहे हैं कि में आपके सामने कोट पेंट पहन कर आने का काम करूं। लेकिन नेपाल की घटनाओं को सही नहीं ठहराया जा सकता यद्यपि नागरिक अगर अपनी बात दृढ़ता से रखेंगे तो सरकारें भी ठीक काम करेंगी। देश की केंद्रीय सरकार और राज्यों की सरकार भी इस हीन भावनाओं से जुड़ी रही हैं। जवाहर लाल नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक सरकारों अधिक दृढ़ता का परिचय देना चाहिए था। जैसे 1962 के युद्ध में चीन ने भारत की 74000 वर्ग किलोमीटर पर कब्जा कर लिया उसे भारत आज तक बापिस नहीं ले सका है। हां श्री मति इंदिरा गांधी ने 1971 का युद्ध जीतकर बांग्लादेश बनवा दिया।यह अपवाद है। इस प्रकार 70 वर्ष बाद कश्मीर से अनुच्छेद 370 भारतीय जनता पार्टी की नरेंद्र मोदी सरकार ने विलोपित की क्योंकि इस मुद्दे को 1950 से ही उठा रहा था। अटल बिहारी वाजपेई ने परमाणु हथियारों का परीक्षण भी अपवाद है। लेकिन 2014 से जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है उसने कड़े फैसले लेना शुरू किए हैं चाहे वह चकमा घुसपैठियों का मामला हो या राष्ट्रीय नागरिक कानून हो सटीक और सबल निर्णय लिया है।

थामा का ट्रेलर रिलीज, आयुष्मान खुराना बने सुपरहीरो ड्रैकुला घोस्ट, रश्मिका से लड़ाया इश्क

बालीवुड फैंस तैयार हो जाइए, क्योंकि इस दिवाली, 2025 की सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक थामा सिनेमाघरों में आने वाली है. फिल्म की रिलीज में अब एक महीने से भी कम समय बचा है, इसलिए जो दर्शक थामा के ट्रेलर रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे. आखिरकार उनका यह इंतजार आज खत्म हो गया है. टीम ने थामा का ट्रेलर रिलीज कर दिया है. दिनेश विजन और मैडाक फिल्म्स के साथ मुंबई के बांद्रा फोर्ट एम्फीथिएटर में थामा ट्रेलर लान्च इवेंट का आयोजन हुआ और यहां से फिल्म थामा का ट्रेलर रिलीज किया.

2.54 मिनट के थामा ट्रेलर की शुरुआत नवाजुद्दीन सिद्दी के धांसू डायलाग से होती हैं, जिसमें वह कहते है, आज से हम इंसानों का खून पिएंगे और अपनी टीम को बड़ा करेंगे और दुनिया पर राज करेंगे और मैं बनूंगा तुम्हारा थामा. इसके बाद कुछ डरावने विजुअल्स दिखाई देते हैं, इसके बाद आयुष्मान खुराना और नवाजुद्दीन का आमना–सामना होता है और अगले ही पल एक अंजान दुनिया से आई रश्मिका की एंट्री होती है और वह आयुष्मान से इश्क लड़ाती नजर आती है.

वेस्टइंडीज को 19 रन से हराकर नेपाल ने किया बड़ा उलटफेर, मैच में बने ये रिकॉर्ड्स

नईदिल्ली, नेपाल क्रिकेट टीम ने इतिहास रचते हुए वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम को पहले टी–20 मुकाबले में 19 रन से हरा दिया। इसी के साथ उसने 3 मैचों की सीरीज में 1–0 की बढ़त ले ली है। ये टी–20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के इतिहास में पहला मौका है जब नेपाल ने किसी टेस्ट खेलने वाले देश को हराया है। ये मुकाबला शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया।

वेस्टइंडीज ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। उनका ये फैसला सही साबित हुआ और नेपाल की टीम 20 ओवर में 148/8 का स्कोर ही बना पाई। जेसन होल्डर ने सबसे ज्यादा 4 विकेट अपने नाम किए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज कभी भी मुकाबले में नजर नहीं आई। 20 ओवर में टीम 129/9 का स्कोर ही बना पाई। कुशल भुर्तेल ने 2 विकेट अपने नाम किए। वेस्टइंडीज का कोई बल्लेबाज 30 रन भी नहीं बना पाया। होल्डर ने 4 ओवर में 20 रन खर्च कर 4 विकेट अपने नाम किए। उनकी इकॉनमी रेट 5 की रही।

उनके अलावा नवीन बिदैसी ने 3 विकेट अपने नाम किए। होल्डर के टी–20 अंतरराष्ट्रीय करियर का यह चौथा 4 विकेट हॉल रहा। उन्होंने अब तक 76 मुकाबले खेले हैं और इसकी 73 पारियों में 27.24 की औसत से 86 विकेट लेने में सफल रहे हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 5/27 का रहा है। सोमपाल कामी को छोड़कर नेपाल के सभी गेंदबाजों ने मैच में अच्छा प्रदर्शन किया। कामी ने 4 ओवर में 43 रन खर्च किए। वहीं, दीपेंद्र सिंह ऐरी, करण केसी, नंदन यादव, ललित राजवंशी और कप्तान रोहित पौडेल को 1–1 सफलता मिली। भुर्तेल ने 4 ओवर में सिर्फ 17 रन खर्च किए और 2 विकेट अपने नाम किए। उनकी इकॉनमी रेट सिर्फ 4.20 की रही। कामी और भुर्तेल ने ही अपने कोटे के 4 ओवर फेंके।

एशिया कप 2025 जहां खेला जा रहा है, वहीं नेपाल ने वेस्टइंडीज को हराकर बड़ा उलटफेर किया है। दिलचस्प बात यह है कि नेपाल इस एशिया कप के लिए क्वालीफाई नहीं कर सका, क्योंकि प्लेऑफ मुकाबले में उसे हांगकांग के हाथों हार का सामना करना पड़ा था। वहीं, हांगकांग ने सऊदी अरब से 55 रन की करारी हार झेलने के बावजूद इस टूर्नामेंट में जगह बनाई।

सिनेमाघरों के बाद अजय देवगन की फिल्म सन आफ सरदार 2 नेटफ्लिक्स पर हुई रिलीज

अजय देवगन की कामेडी फिल्म सन आफ सरदार 2 ने 1 अगस्त को सिनेमाघरों में दस्तक दी थी. ये फिल्म 2012 की हिट फिल्म सन आफ सरदार का स्प्रिचुअल सीक्वल है. फिल्म में अजय ने लीड रोल प्ले किया है. वहीं इस कामेडी ड्रामा में मृणाल ठाकुर, रवि किशन, संजय मिश्रा, नीरू बाजवा, चंकी पांडे, कुब्रा सैत, दीपक डोबरियाल, विंदू दारा सिंह, रोशनी वालिया, शरत सक्सेना, साहिल मेहता और दिवंगत मुकुल देव जैसे कई सितारों ने दमदार रोल प्ले किया है. अगर आप इस फिल्म को सिनेमाघरों में नहीं देख पाए हैं तो अब इसे घर बैठे ओटीटी पर एंजाय कर सकते हैं. चलिए जानते हैं ये किस प्लेटफार्म पर अवेलेबल है. सन आफ सरदार 2 का निर्देशन विजय कुमार अरोड़ा ने किया है. सिनेमाघरों में रिलीज़ होने के आठ हफ़्ते बाद, ये सीक्वल 26 सितंबर यानी आज नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो गई है. स्ट्रीमिंग दिग्गज ने गुरुवार को अपने सोशल मीडिया हैंडल पर फिल्म की रिलीज का अनाउंसमेंट पोस्ट शेयर करते हुए लिखा था,

बाक्स आफिस पर जाली एलएलबी 3 की कमाई में गिरावट जारी

अभिनेता अक्षय कुमार की कोर्टरूम ड्रामा फिल्म जाली एलएलबी 3 को सिनेमाघरों में रिलीज हुए 7 दिन पूरे हो गए हैं। उनकी यह फिल्म 19 सितंबर को दर्शकों के बीच आई थी और शुरुआती 3 दिन इस फिल्म ने बाक्स आफिस पर बढ़िया प्रदर्शन किया। हालांकि, इसके बाद से ही फिल्म के कारोबार में गिरावट जारी है। अब जाली एलएलबी 3 की कमाई के सातवें दिन के आंकड़े सामने आ गए हैं, जो अब तक का सबसे कम कारोबार है। बाक्स आफिस का लेखा–जोखा रखने वाली वेबसाइट सैकनिल्क के मुताबिक, जाली एलएलबी 3 ने अपनी रिलीज के सातवें दिन यानी गुरुवार को 3.50 करोड़ रुपये कमाए, जिसके बाद इसका कुल बाक्स आफिस कलेक्शन 73.50 करोड़ रुपये हो गया है। 80 करोड़ रुपये की लागत में बनी इस फिल्म ने दुनियाभर में 108 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार कर लिया है। बाक्स आफिस पर जाली एलएलबी 3 का सामना ओजी , निशांची, अजेय और मिराई जैसी फिल्मों से हो रहा है।

कुर्क हो सकती है युवराज सिंह, सुरैश रैना और कई क्रिकेटरों की संपत्ति

नई दिल्लीः ऑनलाइन सट्टेबाजी और गेमिंग प्लेटफार्म से जुड़े मामले में प्रीवेंशन ऑफ मनी लांड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत ईडी जल्द ही कुछ खिलाड़ियों और अभिनेताओं की करोड़ों रुपये की संपत्ति कुर्क कर सकती है। सूत्रों ने बताया कि वनएक्सबेट पोर्टल से जुड़े मामले की जांच में पाया गया है कि इनमें से कुछ हस्तियों ने उन्हें दिए गए विज्ञापन शुल्क का इस्तेमाल कई तरह की संपत्तियां हासिल करने में किया, जो पीएमएलए के तहत "अपराध की आय" मानी जाती हैं। ईडी जल्द ही उनकी चल और अचल संपत्तियों को कुर्क करने के लिए पीएमएलए के तहत एक प्रोविजनल कुर्की आदेश जारी कर सकती है, जिनमें संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों में स्थित कुछ संपत्तियां

भी शामिल हैं। वर्तमान में इन संपत्तियों का मूल्यांकन चल रहा है।

इसलिए संपत्तियों है निशाने पर

सूत्रों ने बताया कि मनी लांड्रिंग से अर्जित या निर्मित संपत्तियों को अपराध की आय के रूप में वर्गीकृत किया जाता है और उन्हें कुर्क इसलिए किया जाता है ताकि इस अपराध में लिप्त व्यक्ति ऐसे आपराधिक कृत्य का फल न भोग सकें। सूत्रों ने बताया कि कुर्की आदेश जारी करने के बाद इसे पीएमएलए के तहत संबंधित प्राधिकारी के पास पुष्टि के लिए भेजा जाएगा और स्वीकृत होने के बाद इन संपत्तियों को जब्त करने के लिए एक निर्दिष्ट अदालत में आरोप पत्र दायर किया जाएगा।

इन क्रिकेटरों से होगी पूछताछ

गौरतलब है कि पिछले कुछ हफ्तों में ईडी ने इस जांच के तहत युवराज सिंह, सुरेश रैना, रॉबिन उथप्पा और शिखर धवन जैसे क्रिकेटरों के अलावा अभिनेता सोनू सूद, मिमी चक्रवर्ती (तृणमूल कांग्रेस की पूर्व सांसद) और बांग्ला फिल्मों के अभिनेता अंकुश हाजरा से भी पूछताछ की है। कुछ इंटरनेट मीडिया इंफ्लूएंसरों से भी पूछताछ की गई।

ईडी ने पीएमएलए की धारा 50 के तहत इन हस्तियों के बयान दर्ज किए। सूत्रों ने बताया कि इनमें से कई हस्तियों ने जांच अधिकारियों को उन खातों और लेन–देन का विवरण प्रस्तुत किया है ।

संक्षिप्त समाचार

संपर्क मार्गों के मरम्मत की उठाई मांग

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ीः चौबट्टाखाल विधानसभा क्षेत्र के द्वारीखाल ब्लाक के ग्राम भल्ली से कंदरोडा, चमोलीगांव के बीच स्थित केसर हिन्द से होते हुए खंडाखोलिगांव तक 3 किमी संपर्क मार्ग को जल्द बनाने की मांग उठाई है। ग्रामीणों ने लोनिवि मंत्री एवं स्थानीय विधायक सतपाल महाराज को ज्ञापन देकर जल्द ही संपर्क मार्ग बनाने की मांग की है। लोनिवि मंत्री को दिए गए ज्ञापन में ग्रामीणों ने कहा है कि करीब 20 वर्षो से अधिक समय होने के बाद भी यह संपर्क मार्ग नहीं बन पा रहा है। मोटरमार्ग की सुविधा न होने के चलते बीमार होने पर ग्रामीणों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने मंत्री से संपर्क मोटरमार्ग की स्वीकृति देने की मांग की है। ज्ञापन में त्रिपति लाल, ग्राम प्रधान मातबर सिंह, रविंद्र बिष्ट, तेलेश्वर देवी, सीता देवी, सुमन, अर्जुन सिंह, आशा देवी, कल्पेश्वरी देवी आदि के नाम शामिल थे।

ट्रस्ट ने विद्यार्थियों को दी छात्रवृत्ति

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ीः नगरपालिका सभागार में श्री कंडोलिया देवता मातृ–पितृ विहीन कन्या शिक्षा ट्रस्ट द्वारा छात्रवृत्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान 38 मातृ-पितृ विहीन बच्चों को छात्रवृत्ति दी गई। रविवार को नगरपालिका सभागार में आयोजित पांचवे छात्रवृत्ति कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पौड़ी परिसर के निदेशक यूसी गैरोला ने ट्रस्ट के कार्यो की सराहना की। ट्रस्ट के संस्थापक कालिका प्रसाद काला ने बताया की विभिन्न कारणों से जो बच्चे मातृ पितृ विहीन हो गए हैं उनकी आर्थिक रूप से मदद करना ही उनका मुख्य उद्देश्य है। वह कई वर्षों से ऐसे बच्चों की मदद कर रहे हैं। कहा कि ऐसे जरूरतमंद बच्चों की मदद के लिए अधिक से अधिक लोगों को आना चाहिए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि नगरपालिका अध्यक्ष हिमानी नेगी, डीईओ रणजीत सिंह नेगी, प्राधिकृत सदस्य प्रदीप कुमार भट्ट, केपी मैठाणी, कैलाश कन्नौजिया आदि शामिल रहे।

शिविर में हुआ 525 ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण

नई टिहरी। देवप्रयाग ब्लॉक मुख्यालय हिंडोलाखाल स्थित सीएचसी में स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान के तहत विशाल स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में क्षेत्र के विभिन्न गांवों से आए 525 रोगियों की जांच की गयी। रविवार को सीएचसी हिंडोलाखाल में आयोजित स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ क्षेत्रीय विधायक विनोद कंडारी, ब्लॉक प्रमुख विनोद बिष्ट व डिप्टी सीएमओ डॉ. जितेंद्र भंडारी ने संयुक्त रुप से किया। विधायक कंडारी ने कहा कि, ऐसे शिविर ग्रामीण परिवेश में रहने वाली जनता को स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने अभियान को सफल बनाने पर स्वास्थ्य कर्मियों की विशेष प्रशंसा की। शिविर में विभिन्न मेडिकल कॉलेजों व जिले की विशेषज्ञ टीम ने रोगियों की जांच कर उनका उपचार किया। विधायक कंडारी ने दिव्यांगों को व्हील चियेर भी प्रदान की। इसके साथ ही शिविर में ग्रामीणों को परिवार नियोजन सेवाएं भी उपलब्ध कराई गई व सभी को अच्छे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया। सीएचसी प्रभारी डॉ. अंजना गुप्ता ने बताया कि, शिविर में 34 दिव्यांग व 26 आयुष्मान कार्ड बनाये गए। जबकि ई–रक्त कोष के लिए 5 रजिस्ट्रेशन हुए। खून की कमी के 20, टीबी के 7 व गैर संचारी रोग के 45 मामलों की जांच की गयी। शिविर में जिपंस पुष्पा भट्ट, भाजपा मंडल सचिव मनोज बागड़ी, प्रधान मनोज पाल, अर्जुन चौहान आदि सहित पैरामेडिकल स्टॉफ, एनएचएम कार्मिक, सीएचओ, आशा, एएनएम कार्यकर्ता आदि मौजूद रहे।

श्रीनगर में लगा स्वास्थ्य कैंप, 209 से अधिक लोगों ने लिया लाभ

श्रीनगर गढ़वाल। स्वस्थ नारी, स्वस्थ परिवार पखवाड़े के अंतर्गत राजकीय पालीटेक्निक एवं एनआईटी कैम्पस, श्रीनगर में रविवार को राजकीय उप–चिकित्सालय श्रीनगर के चिकित्सकों की ओर से स्वास्थ्य मेला एवं बहुद्देशीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 209 से अधिक लोगों ने स्वास्थ्य लाभ लिया। मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. विमल गुंसाई और कैंप के नोडल अधिकारी रेडियोलॉजिस्ट डॉ. रचित गर्ग ने कहा कि प्रधानमंत्री के जन्मदिन के अवसर से दो अक्टूबर गांधी जयंती तक स्वास्थ्य शिविर आयोजित होंगे। कहा कि स्वास्थ्य मंत्री डॉ धन सिंह रावत के दिशा निर्देश में शिविरों का सफल संचालन हो रहा है। चिकित्साधिकारी डॉ. मारिषा पंवार ने सामान्य रोगियों की जांच और उपचार किया।

पेपर लीक पर युवाओं का आक्रोश, शहर में निकाली रैली

कोटद्वार में देवी रोड से झंडाचौक तक निकाली गई आक्रोश रैली

कोटद्वार में आक्रोश रैली निकालते बेरोजगार संघ के पदाधिकारी व अन्य युवा

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारःउत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की परीक्षा का पेपर लीक होने से आक्रोशित युवाओं ने रविवार को कोटद्वार की सड़कों पर जुलूस निकालते हुए प्रदर्शन किया। कहा कि पेपर लीक घटना की सीबीआई जांच होनी चाहिए। युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

बेरोजगार संघ के बैनर तले रविवार को युवा देवी मंदिर तिराहे के समीप एकत्रित हुए। यहां उन्होंने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। युवा देवी रोड, नजीबाबाद रोड होते हुए झंडाचौक में पहुंच जहां पर जनसभा का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि प्रदेश में नकल विरोधी कानून लागू होने के बाद भी नकल माफियाओं के हौशले बुलंद है। वर्तमान में सत्ता में आसीन भारतीय जनता पार्टी की सरकार नकल माफियाओं पर अंकुश लगाने में असफल रही है। कहा कि जब भी भर्ती परीक्षा आयोजित करवाई जाती है, लेकिन एन वक्त पर पेपर लीक हो जाता है। कहा कि अभी तक जितनी भी भर्ती परीक्षा हुई है, उन सभी भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक करवाने में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ताओं के तार जुड़े रहे है, कहा कि इस बार भी जिस सेंटर से पेपर लीक हुआ है, वह भी भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता है। कहा कि पेपर लीक होने से होनहार छात्रों का बड़ा नुकसान हुआ है, जो छात्र दिनरात कर अपनी परीक्षा की तैयारी कर रहा था, उसके अरमानों पर पानी फिर गया है। कहा कि पेपर लीक मामले की सीबीआई जांच हो जाने से भ्रष्ट तंत्र को बेनकाब किया जा सकता है। कहा कि वर्तमान में प्रदेश सरकार छात्रों के आंदोलन को जाति, धर्म के आधार पर बांटने का प्रयास कर रही है, लेकिन अब उत्तराखंड का जनमानस भाजपा की करनी व कथनी को अच्छी तरह से समझ गया है, इसलिए अब बेरोजगार युवा अपनी हक की लड़ाई स्वंय लड़ रहा है। वक्ताओं ने कहा कि अब जो भी आंदोलन को कमजोर करने का प्रयास करेगा, उसके खिलाफ भी आवाज बुलंद की जाएगी। वक्ताओं ने प्रदेश सरकार से मामले की सीबीआई से जांच व परीक्षा को रद्द कर दोबारा परीक्षा आयोजित करवाने की मांग की है। इस मौके पर कांग्रेस की पूर्व प्रदेश महामंत्री रंजना रावत, उत्रांद के वरिष्ठ नेता डा.शक्तिशैल कपरवाण, पूर्व सैनिक महेंद्र पाल सिंह रावत, पूर्व छात्र छात्र संघ अध्यक्ष रमेश सिंह,सुरेंद्र सिंह रावत, जसबीर सिंह राणा, विजय रावत, सुनील सेमवाल, रोहित नेगी, हरीश रावत, अंकित रावत, प्रवीन रावत मौजूद रहे।

यमकेश्वर बना ओवर आल चैंपियन

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः राजकीय स्टेडियम कोटद्वार में आयोजित शरदकालीन व शीतकालीन खेल प्रतियोगिता का समापन हो गया। इस मदौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में यमकेश्वर ओवर आल चैंपियन घोषित किया गया। प्राथमिक 50 मीटर बालक वर्ग में पौड़ी के शौर्य, और बालिकाओं में थलीसैंण की अंकिता, 100 मीटर बालक में पौड़ी के सागर, बालिकाओं में पाबो की गुंजन, 200 मीटर बालक वर्ग में पौड़ी के अयांश, और बालिकाओं में नैनीडांडा की सानवी ने स्वर्ण पदक जीते। 400 मीटर में थलीसैंण के अनिकेत, और खिर्सु की आर्सषि ने गोल्ड मेडल जीते। सब जूनियर वर्ग की 100 मीटर में यमकेश्वर के विवेक और खिर्सु की अनम, 200 मीटर में यमकेश्वर के दीनानाथ और रिखणीखाल की कनिका, 400 मीटर में यमकेश्वर के प्रिंस और बीरोंखाल की साधना पहले स्थान पर रहे।सब जूनियर वर्ग की ऊंची कूद में दुगड्डा के अर्पण, और खिर्सु की मोहिता चक्का फेंक में नैनीडांडा के करण व जयहरीखाल की संध्या ने स्वर्ण पदक जीता। सब जूनियर वर्ग की बैडमिंटन प्रतियोगिता के बालकों और बालिकाओं के एकल मुकाबले दुगड्डा विकास खंड के आशुतोष और उर्मिला ने जीते। सब जूनियर बैडमिंटन बालकों के युगल मुकाबले में यमकेश्वर और बालिकाओं के युगल में दुगड्डा ने फाइनल मैच जीते। सब जूनियर वर्ग के बालकों की वालीबाल प्रतियोगिता के फाइनल में रिखणीखाल ने दुगड्डा को एवं बालिका वर्ग में पोखडा ने पौड़ी को पराजित किया।सब जूनियर बालक एकल वर्ग टेबल टेनिस में पौड़ी के अभिनव विजेता और दुगड्डा के अविराज उपविजेता रहे। विशिष्ट व्यायाम प्रदर्शन में विकास खंड पौड़ी ने प्रथम, दुगड्डा ने द्वितीय और कोट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्राथमिक बालक वर्ग में पौड़ी के सागर प्राथमिक बालिका वर्ग में खिर्सु की आर्सषि सब जूनियर बालक वर्ग में यमकेश्वर के विवेक सब जूनियर बालिका वर्ग में खिर्सु व्यक्तिगत चैंपियन रहे। इस मौके पर खेल समन्वयक ललित बिष्ट, प्रदीप रावत, भगत भंडारी, बिपुल भंडारी, अरूण कुकरेती, शशि भूषण अमोली, मोहन सिंट पटवाल, कुलगौरव, नफीस अहमद, सिराजुद्दीन, उमेश वर्मा, सुदर्शन जुयाल, रविंद्रद मंजेड़ा, सत्यपाल, राजेश बलोदी, मनोज रावत, जसपाल असवाल मौजूद रहे।

गुलदार ने युवती पर किया हमला

नौगांवखाल अस्पताल में उपचार के लिए पहुंची प्रियंका

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः पर्वतीय क्षेत्रों में गुलदार के हमले थमने का नाम नहीं ले रहे। विकासखंड पोखड़ा के अंतर्गत ग्राम हलूणी में घास काटने गई एक युवती पर गुलदार ने हमला कर दिया। युवती को उपचार के लिए स्वास्थ्य केंद्र नौगांवखाल पहुंचाया गया।

जानकारी के अनुसार, रविवार सुबह साढ़े नौ बजे 23 वर्षीय प्रिया नेगी अपनी मां शोभा देवी के साथ घर के समीप खेतों में घास काटने के लिए गई हुई थी। प्रियंका खेत में घास काट रही थी इसी दौरान झाड़ियों के समीप उसे गुलदार घात लगाकर बैठा हुआ दिखाई दिया। गुलदार ने प्रियंका को पकड़ने के लिए छलांग मारी और उसके हाथ, पैर व पीठ पर नाखूनों से हमला कर दिया। गुलदार के चंगुल से छूटकर शोर मचाते हुए प्रियंका गांव की ओर दौड़ पड़ी। इसी दौरान ऊपर के खेत में खड़ी प्रियंका की मां ने गुलदार को बेटी के पीछे दौड़ता हुआ देखा तो वह दरांती लेकर गुलदार से भिड़ने के लिए कूद पड़ी। शोभा देवी की हिम्मत से पस्त गुलदार वापस जंगल की ओर चला गया। घटना के बाद प्रियंका व उसकी मां वापस गांव पहुंचे और पूरी घटना के बारे में ग्रामीणों को बताया। इसके बाद ग्रामीणों ने प्रियंका को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नौगांवखाल पहुंचाया। अस्पताल की नर्सिंग आफिसर मीना ने बताया कि हमले में प्रियंका के शरीर पर गुलदार के नासूनों के निशान है। प्रियंका को उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई।

देश की तरक्की के लिए स्वदेशी को अपनाएं

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः आमजन को स्वदेशी के प्रति जागरूक करने के लिए भारतीय जनता पार्टी की ओर से कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान लोगों से देश की तरक्की के लिए स्वदेशी को अपनाने की अपील की गई।

व्यापार मंडल सभागार में आत्मनिर्भर भारत व स्वदेशी पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। लैंसडौन विधायक दिलीप रावत ने कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों को आत्मनिर्भर भारत के महत्व के बारे में बताया।

कहा कि भारतीय जनसंघ के संस्थापक पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने आम नागरिकों को आर्थिक रूप से स्वावलंबी और देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्थानीय उत्पादों के प्रयोग का संदेश दिया था। वर्ष -2014 में नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे नवाचारी प्रयोगों से स्वदेशी को बढ़ावा दिया। कहा कि भारतीय जनता पार्टी

आयोजित गोष्ठी में भाग लेते भाजपा कार्यकर्ता व पदाधिकारी

आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत स्वदेशी और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए दिसंबर माह तक स्वदेशी मेले, प्रदर्शनियां आदि विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करेगी। कहा कि स्वदेशी और स्थानीय स्तर पर तैयार किए जा रहे उत्पादों के उपयोग और स्थानीय व्यापारियों को बढ़ावा देने से ही भारत आत्मनिर्भर बनेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसी दूरगामी योजनाओं को लागू करने का ही परिणाम है कि आज भारत विनिर्माण क्षेत्र, अंतरिक्ष टेक्नोलॉजी और आयुध निर्माण में दुनिया का पसंदीदा निर्यातक बन गया है। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष राज गौरव नौटियाल, सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के जिला संयोजक मोहन सिंह नेगी, जिला महामंत्री सुरेंद्र आर्य, नगर अध्यक्ष विकास दीप मित्तल विजयानंद पोखरियाल, हरी सिंह पुंडीर, बीना रावत, अनीत चावला, राजदीप माहेश्वरी, प्रेमा खंतवाल, आशीष रावत, गजेंद्र धस्माना, शांता बमराडा आदि मौजूद रहे।

दीपांशी व अनमोल को मिला बेस्ट परफार्मार का खिताब

आईएचएमएस कॉलेज में आयोजित डांडिया प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते विद्यार्थी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः नवरात्र के मौके पर इंस्टीट्यूट ऑफ हॉस्पीटेलिटी, मैनेजमेंट एंड साइंसेज (आईएचएमएस) कालेज में डांडिया उत्सव मनाया गया। छात्र-छात्राओं ने एक से बढ़कर एक डांडिया नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दौरान दीपांशी व अनमोल को बेस्ट परफार्मर चुना गया।

बीईएल रोड बलभद्रपुर स्थित कॉलेज परिसर में आयोजित डांडिया महोत्सव का शुभारंभ कॉलेज के प्रबंध निदेशक बीएस नेगी, कार्यकारी निदेशक अजय राज नेगी, निदेशक प्रबंधन लेफ्टिनेंट कर्नल (सेनि.) बीएस गुसाई व प्राचार्य डॉक्टर अश्वनी शर्मा ने दीप प्रज्जवलित कर किया। प्रबंध निदेश-ाक बीएस नेगी ने कहा कि डांडिया देवी दुर्गा की शक्ति का प्रतीक है। इसे राक्षस महिसासुर पर माता दुर्गा की विजय के रुप में मनाया जाता है। डांडिया नृत्य केवल धार्मिक ही नहीं, अपितु एक बड़ा सांस्कृतिक आयोजन भी है। इस दौरान विद्यार्थियों ने डांडिया के हिंदी और गुजराती गीतों पर मनमोहक नृत्य प्रस्तु किए। बीसीए थर्ड सेमेस्टर की टीम नाइन ने बेहतरीन प्रस्तुति देते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। अतिथियों ने रिशभ, पारस, विकास, मयंक, सौरभ, अक्षत, परिधि बिष्ट, तनीषा, पवनी, मानसी और इनायत को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। प्राध्यापकों की महिला और पुरुष वर्ग की प्रतियोगिता में असिस्टेंट प्रोफेसर नैनिका तिवारी और पुरुष वर्ग में असिस्टेंट प्रोफेसर गुरदीप सिंह ने बाजी मारी। डांडिया प्रतियोगिता के दौरान बेहतरीन नृत्य प्रदर्शन के लिए छात्रा वर्ग में बीसीए की छात्रा दीपांशी डोबरियाल और छात्र वर्ग में बीबीए के छात्र अनमोल को पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर सपना रौथाण, नरेश थपलियाल, सुरेंद्र जगवान, अनुराग सेमवाल, वीरेंद्र आर्य आदि मौजूद रहे।

नवनिर्वाचित छात्रसंघ पदाधिकारियों का किया स्वागत

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ीः हेमवती नंदन गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय के बीजीआर परिसर पौड़ी में जीते एनएसयूआई के नवनिर्वाचित छात्रसंघ पदाधकारियों का जिला कांग्रेस कार्यालय में स्वागत किया गया। इस दौरान सभी ने कांग्रेस को मजबूत करने पर जोर दिया। बीते शनिवार को पौड़ी परिसर में हुए छात्र संघ चुनाव में एनएसयूआई ने अध्यक्ष, सचिव, सहसचिव, उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय प्रतिनिधि और छात्र–छात्रा प्रतिनिधि के पद पर एनएसयूआई ने जीत हासिल की थी। रविवार को कांग्रेस कार्यालय में एनएसयूआई से अध्यक्ष पद पर जीते चिराग गुसांई, उपाध्यक्ष पद पर मानसी डंगवाल, विश्वविद्यालय प्रतिनिधि पद पर अखिल रावत, सचिव पद पर हर्षवर्धन, सहसचिव पद पर दीपांजल टम्टा और छात्रा प्रतिनिधि पद दुर्गा खंरियाल और पूनम बुटोला को सम्मानित किया गया।

गंगानगर से तिलवाड़ा तक दो दिन में लोग स्वयं हटाएं अतिक्रमण

रुद्रप्रयाग। केदारनाथ हाईवे पर सड़क चौड़ीकरण के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग विभाग ने गंगानगर से तिलवाड़ा तक लोगों को स्वयं अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए हैं। विभागीय स्तर पर दो दिनों में अतिक्रमण हटाने का अल्टीमेटम दिया गया है। जबकि विभाग द्वारा गंगानगर से तिलवाड़ा तक लाउडस्पीकर से मुनादी की कार्रवाई भी की गई है। जिलाधिकारी प्रतीक जैन के निर्देशों के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग विभाग द्वारा गंगानगर से लेकर विजयनगर अगस्त्यमुनि होते हुए सिल्ली तिलवाड़ा तक लाउडस्पीकर के माध्यम से व्यापक मुनादी की गई। मुनादी के माध्यम से स्थानीय नागरिकों को बताया गया कि जिनकी भूमि का मुआवजा वितरण की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है, उनके द्वारा यदि अब भी राष्ट्रीय राजमार्ग के मार्गाधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण किया गया है, तो इसे तुरंत स्वयं से हटाना दें। विभागीय अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि पूर्व में भी ऐसे अतिक्रमणों को हटाने के लिए संबंधित व्यक्तियों को नोटिस जारी कर जरूरी सूचना दी जा चुकी है, किन्तु फिर भी कुछ क्षेत्रों द्वारा अतिक्रमण यथावत रखा गया है। अब विभाग द्वारा इस पर सख्त रुख अपनाते हुए कहा है कि सभी अतिक्रमणकारी आगामी दो दिन के भीतर स्वयं से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई कर दें, अन्यथा समयावधि बीत जाने के बाद विभागीय स्तर पर जेसीबी मशीनों के माध्यम से अतिक्रमण को हटाने की कार्यवाही की जाएगी। इस प्रक्रिया में यदि किसी प्रकार की क्षति होती है तो उसकी संपूर्ण जिम्मेदारी संबंधित अतिक्रमणकारी की होगी। विभाग इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करेगा। विभागीय अधिकारियों ने क्षेत्रवासियों से अपील की है कि वे राष्ट्रीय हित में एवं सुगम यातायात व्यवस्था के लिए स्वयं से सहयोग करें।

दोणी वल्ली–पल्ली सड़क के सुधारीकरण की मांग

नई टिहरी। घनसाली–अखोड़ी मोटर मार्ग के पाख बैंड से कटी ग्रामसभा दोणी वल्ली व पल्ली मोटर मार्ग के सुधारीकरण व डामरीकरण की मांग ग्रामीणों ने है। ग्रामीणों ने इस बाबत डीएम से ज्ञापन सौंपकर कहा की चार को जोड़ने वाली इस सड़क के हालात न सुधरे तो आंदोलन को मजबूर होंगे। ग्रामीणों ने डीएम को सौंपे ज्ञापन में बताया कि वित्तीय वर्ष 2008–09 में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सिंचाई खंड एक नई टिहरी ने 3.6 किमी की इस सड़क का निर्माण किया गया था। जिसके बाद इस सड़क का प्रथम कोट डामरीकरण 2021–11 में किया गया। इसके बाद इस सड़क की पीएमजीएसवाई ने कोई सुध नहीं ली। आज यह सड़क बुरी तरह से बदहाल बनी हुई है। बार–बार सड़कें सुधारीकरण को लेकर मांग की जाती रही है, लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई है। ग्रामीण 2017–18 से लगातार पीएमजीएसवाई व लोनिवि से इस सड़क के सुधारीकरण की मांग करते आ रहे हैं, लेकिन इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि इस सड़क से चार गांव जुड़े हैं और यह गांव मुख्यमंत्री पलायन गांव घोषित हैं। डीएम से चार गांवों की इस सड़क के सुधारीकरण की मांग करते हुए ग्रामीणों ने कहा है कि यदि सड़क के हालात नहीं सुधारे गये, तो आंदोलन को मजबूत होंगे।

महिलाओं के पास आगे बढ़ने के लिए कई अवसर

नई टिहरी। पहाड़ की पुकार संगठन ने महिलाओं में नेतृत्व क्षमता बढ़ाने के लिए टिहरी में नारायणी अभियान शुरू किया है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने लिए सरकार से लेकर गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से कई योजनाएं चलाई जा रही है। जिनका लाभ लेकर उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए। संगठन की संस्थापक अवंतिका भंडारी ने बताया कि रविवार को नवरात्र के अवसर पर जिला मुख्यालय के त्रिदेव मंदिर में विशेष पूजा–अर्चना कर नारायणी अभियान शुरू किया गया।

बताया कि अभियान के तहत स्थानीय महिलाओं को सामाजिक, सहकारिता और राजनीतिक क्षेत्र में नेतृत्व करने के लिए तैयार किया जाएगा।

साथ ही सांस्कृतिक संरक्षण के तहत लोक कला, लोक गीत, लोक नृत्य, पारंपरिक वेशभूषा, पर्व–त्योहार के लिए नई पीढ़ी को इनकी जानकारी देकर समृद्ध किया जाएगा। इसके अलावा शिक्षा व कौशल विकास के क्षेत्र में भी भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

जीएमओयू में संजय, ताजबर व गणेश भट्ट बने संचालक

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः गढ़वाल मोटर्स आनर्स यूनियन लिमिटेड (जीएमओयू) की ओर से वार्षिक साधरण बैठक में संचालकों के चुनाव करवाए गए। इस दौरान संजय बड़थ्वाल, ताजबर खत्री व गणेश भट्ट को संचालक चुना गया।

जीएमओयू सभागार में बैठक का आयोजन किया गया। संचालक मंडल के अध्यक्ष भास्करानंद भारद्वाज की अध्यक्षता में वार्षिक बैठक के मुद्दों पर चर्चा हुई। बैठक में आय-व्यय के विवरण के साथ ही बैलेंस शीट पर चर्चा हुई। कंपनी के सचिव विजयपाल सिंह नेगी ने बताया कि एजीएम के बाद तीन संचालकों के लिए चुनाव कराए गए। जिसमें ताजबर सिंह खत्री को सर्वाधिक

कोटद्वार में जीएमओयूलि के निर्वाचित संचालक

193 वोट मिले। दूसरे नंबर पर पर संजय कुमार बड़थ्वाल को 179 वोट और तीसरे नंबर पर गणेश भट्ट को 175 वोट मिले। तीन संचालक पद के लिए कुल छह प्रत्याशियों ने नामांकन करवाया। था। नियमानुसार सर्वाधिक वोट पाने वाले संचालक चुन लिए गए। कुल 305 मतदाता सदस्यों में से 293 ने चुनाव प्रक्रिया में प्रतिभाग किया। चुनाव प्रक्रिया पूर्व अध्यक्ष एवं चुनाव संयोजक महावीर सिंह रावत की देखरेख में संपन्न करवाई गई।

आत्मनिर्भर बन रहा भारतः महाराज

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ीः स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के तहत रविवार को पोखड़ा ब्लाक के राजकीय महाविद्यालय चौबट्टाखाल में बहुद्देश्यीय शिविर आयोजित हुआ। शिविर में पर्यटन मंत्री एवं चौबट्टाखाल विधायक सतपाल महाराज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। प्रधानमंत्री की मन की बात कार्यक्रम को सामूहिक रूप से सुनने के बाद महाराज ने यहां मौजूद लोगों को स्वच्छता की शपथ दिलाई।महाराज ने कहा कि यह केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी है। महाराज ने कहा कि अफसर जनता की शिकायतों को गंभीरता से लें। यदि व्यस्तता के कारण फोन रिसीव न कर पाएं तो संबंधित को बैक कॉल अवश्य करें। कहा कि प्रधानमंत्री के

नेतृत्व में देश और प्रदेश नई ऊंचाईयों को छू रहा है। मेक इन इंडिया से रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ी है और रक्षा उत्पादों के निर्यात में ऐतिहासिक वृद्धि हुई है। महाराज ने जीएसटी सुधारों और ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का भी जिक्र किया। कहा कि शिविरों के माध्यम से सरकार की योजनाओं की जानकारी और लाभ सीधे जनता तक पहुंच रहा है। इन शिविरों में सक्रिय भागीदारी कर अधिकतम लाभ उठाएं। इस मौके पर सीडीओ गिरीश गुणवंत ने कहा कि शिविर में जो भी शिकायतें आ रही है उनका समय से निस्तारण किया जा रहा है। इस मौके पर पेयजल, विद्युत, सड़क के अलावा वन्यजीवों के आंतक से लेकर फसलों के नुकसान संबंधी 30 शिकायतें आई, इसमें से 22 का मौके पर ही निस्तारण किया गया। अन्य को एक पखवाड़े के भीतर निस्तारण के निर्देश संबंधित अफसरें को दिए गए। वहीं स्वास्थ्य शिविर में 205 लोगों ने पंजीकरण करवाया। 17 को दिव्यांग प्रमाण पत्र जारी हुए। 35 का टीबी एक्सरे, 119 नेत्र परीक्षण जबकि 34 के स्वास्थ्य संबंधी अन्य परीक्षण किए गए। आयुर्वेदिक चिकित्सालय ने 40 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण कर निशुल्क दवा वितरित की। समाज कल्याण विभाग ने 9 यूडीआईडी के आवेदन लिए। कृषि विभाग ने कृषि यंत्रीकरण मद में 4-4 लाख की राशि के अनुदान प्रमाण पत्र दिए। शिविर में अन्य विभागों ने भी योजनाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम में एसडीएम चौबट्टाखाल दीक्षिता जोशी, परियोजना निदेशक डीआरडीए विवेक कुमार उपाध्याय, ब्लॉक प्रमुख पोखड़ा संजय सिंह, सीएमओ डॉ. शिवमोहन शुक्ला, मुख्य कृषि अधिकारी डॉ. वीके यादव, आदि अफसर मौजूद रहे।

सीआईएसएफ के मेधावी को मिलेगा छात्रवृत्ति का लाभ

नई टिहरी। सीआईएसएफ के मेधावी छात्रों को अब शिक्षा और खेल के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर छात्रवृत्ति मिलेगी। साथ ही कर्तव्य निभाते हुए अपने प्राणों की आहुति देने वाले जवानों के बच्चों को भी छात्रवृत्ति का लाभ मिलेगा।

टिहरी बांध की सुरक्षा में लगी सीआईएसएफ के कमांडेंट गौरव तोमर ने बताया कि महानिदेश-ाक के प्रयासों से जवानों के बच्चों को कई सुविधाएं दी जा रही है। बताया कि नई मेधावी छात्रवृत्ति योजना शुरू होने से बड़ी संख्या में जवानों के बच्चों को लाभ मिलेगा। उन्होंने योजना की सराहना करते हुए बताया कि कक्षा 12वी में 80–90 अंक हासिल करने वाले छात्रों को 20 हजार और 90 प्रतिशत से अधिक वालों को 25 हजार की छात्रवृत्ति मिलेगी। इसके साथ ही विभिन्न खेलों में भी बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्रों को भी छात्रवृत्ति योजना का लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि इस कल्याणकारी सुधार ने बल का मनोबल बढ़ा है।

श्रीनगर में प्रधानाचार्य की सीधी भर्ती के विरोध शिक्षक सड़क पर

श्रीनगर गढ़वाल। प्रधानाचार्य सीधी भर्ती निरस्त करने, पदोन्नति, स्थानांतरण सहित 34 सूत्रीय मांगों को लेकर रविवार को राजकीय शिक्षक संघ के बैनर तले शिक्षकों ने श्रीनगर में आक्रोश रैली निकाली। इस दौरान शिक्षकों ने प्रदेश सरकार के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया।

रैली में गढ़वाल मंडल के सभी जिलों से पहुंचे शिक्षकों ने सरकार और शिक्षा मंत्री के खिलाफ प्रदर्शन किया। इस दौरान शिक्षकों एनआईटी मैदान से राष्ट्रीय राजमार्ग होते हुए गोला पार्क तक आक्रोश रैली निकाली। रैली में प्रांतीय अध्यक्ष राम सिंह चौहान ने कहा कि राजकीय शिक्षक संघ गत एक माह से क्रमबद्ध आंदोलनरत है। 18 अगस्त से शुरू हुए आंदोलन के अंतर्गत शिक्षक चॉक डाउन, ब्लॉक स्तर पर धरना–प्रदर्शन करने के बाद बीते 17 सितंबर को राजधानी देहरादून में प्रदर्शन कर सरकार का ध्यान अपनी ओर खींच रहे हैं। इसके बावजूद अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हो पाई है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की उदासीनता के चलते शिक्षक आज सड़कों पर हैं। उन्होंने कहा कि मांगों पर कार्रवाई किये जाने को लेकर शिक्षकों द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को खून से पत्र लिखा गया है। रैली में मौजूद रमेश पैन्यूली, श्याम सिंह, हेमंत, लक्ष्मण सिंह सजवाण, माखन लाल, मनोज काला, जयदीप रावत, अब्बल सिंह, गुकुल मारतोलिया ने कहा कि लम्बे समय से शिक्षक पदोन्नति और प्रधानाचार्य सीधी भर्ती सहित अन्य मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

गढ़वाल विवि में पेपर लीक के खिलाफ प्रदर्शन

श्रीनगर गढ़वाल। गढ़वाल विवि में नवनिर्वाचित छात्रसंघ उपाध्यक्ष शिवांक नौटियाल के नेतृत्व में रविवार को बिड़ला परिसर मुख्य द्वार पर यूकेएसएसएससी पेपर लीक के खिलाफ आइसा छात्र संगठन से जुड़े छात्र–छात्राओं ने नारेबाजी कर प्रदर्शन किया।छात्रसंघ उपाध्यक्ष शिवांक नौटियाल ने कहा कि उत्तराखंड के युवाओं के भविष्य के साथ सरकार द्वारा किये जा रहे खिलवाड़ के खिलाफ जल्द ही श्रीनगर में एक विशाल रैली आयोजित की जाएगी। इस दौरान प्रदर्शनकारी छात्र–छात्राओं ने लद्दाख में गिरफ्तार किए गए सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की रिहाई की मांग भी की। कहा कि सोनम वांगचुक लद्दाख में जल, जंगल और जमीन की लड़ाई लड़ रहे हैं। उत्तराखंड में भी इन्हीं सवालों की लड़ाई है। कहा कि सभी लोग एकजुटता के साथ लद्दाख की जनता के समर्थन करते हैं।मौके पर पूर्व छात्रा प्रतिनिधि प्रियंका खत्री, पूर्व छात्रसंघ उपाध्यक्ष रॉबिन असवाल, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष अंकित उछोली, अतुल सती, आशुतोष नेगी, युवराज, प्रिंस वर्मा, तुषार नेगी, हिमांशी नौटियाल आदि मौजूद रहे।

युवाओं की भावनाओं के साथ खेलना गलत: नौटियाल

चमोली। कर्णप्रयाग विधानसभा के विधायक अनिल नौटियाल ने कहा कि कुछ लोग युवाओं को पेपर लीक मामले को लेकर भड़का रहे हैं। पेपर लीक मामले में एसआईटी की जांच चल रही है। रविवार को कर्णप्रयाग में पत्रकारों से बात करते हुए विधायक ने कहा कि सरकार युवाओं के भविष्य के प्रति गंभीर है। सीएम ने नियुक्तियों के द्वार खोले हैं और 25 हजार नियुक्तियां हो गई हैं। उन्होंने कहा कि पेपर लीक को मुद्दा बनाकर कुछ लोग युवाओं को भड़काकर गलत दिशा की ओर ले जा रहे हैं। कहा कि छात्रों व युवाओं की भावनाओं के साथ खेलना गलत है। इस मामले में एसआईओ जांच चल रही है। जरूरत पड़ेगी तो सरकार सीबीआई जांच भी कराएगी। जो भी संलिप्त होगा उस पर कठोर कार्रवाई की जाएगी। विधायक ने कहा कि सरकार जनहित के कई काम कर रही है। इसका फायदा लोगों को मिल रहा है। उन्होंने सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को भी बताया। कहा कि कर्णप्रयाग–रानीखेत मार्ग मुख्य बाजार से घटगाड़ पुल तक दुरुस्त करने के लिए एनएच के अधिकारियों को निर्देशित किया गया है।

पुलिस ने 70 खोए मोबाइल फोन बरामद किए

हरिद्वार। सिडकुल थाना पुलिस ने ऑपरेशन रिकवरी के तहत 70 खोए मोबाइल फोन बरामद कर उनके मालिकों को सौंप दिए। इनकी कुल कीमत करीब 14 लाख 68 हजार बताई जा रही है। एसएसपी हरिद्वार प्रमेन्द्र सिंह डोबाल के निर्देशन में पुलिस ने सीईआईआर (सेंट्रल इक्विपमेंट आईडेंटिटी रजिस्टर) पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए यह बड़ी कामयाबी हासिल की। सिडकुल थाना प्रभारी नितेश शर्मा ने बताया कि रामद फोन में से कुछ मोबाइल बाहरी राज्यों से रोज़गार के लिए सिडकुल स्थित कंपनियों में काम कर रहे कर्मचारियों के थे, जबकि कई मोबाइल स्थानीय निवासियों के निकले। खोए मोबाइल वापस पाकर पीड़ितों के चेहरों पर खुशी लौट आई।

जन अधिकार पार्टी ने भगत सिंह को किया याद

हरिद्वार। शहीद–ए–आजम भगत सिंह की जयंती पर जन अधिकार पार्टी (जनशक्ति) की ओर से रविवार को जिला कार्यालय में श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया गया। पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। राष्ट्रीय महासचिव हेमा भंडारी ने कहा कि शहीद भगत सिंह का जीवन युवाओं के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहेगा। उन्होंने मात्र 23 वर्ष की उम्र में आज़ादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए। जिलाध्यक्ष आलीम अंसारी ने कहा कि वर्तमान समय में भगत सिंह के विचारों को अपनाना और युवाओं तक पहुंचाना सबसे बड़ी जरूरत है। उनका सपना समानता और न्याय पर आधारित भारत का था, जिसे हमें मिलकर साकार करना होगा।

मंदिरों में पूजा अर्चना के लिए भक्तों की भीड़

चमोली। नवरात्र के सातवें दिन कर्णप्रयाग, सिमली, लंगासू, सिंवाई, गौचर और आदिबदरी सहित आसपास के मंदिरों में देवी की पूजा–अर्चना के लिए भक्तों की भीड़ लगी रही। श्रद्धालुओं ने देवी के पुण्य दर्शन कर सुख समृद्धि का आशीर्वाद मांगा। इस दौरान भक्तों ने कर्णप्रयाग के उमा देवी मंदिर में भजन–कीर्तन किए।

सीएम धामी ने किया प्रतिभा सम्मान समारोह में उत्तराखंड बोर्ड की परीक्षा में विद्या भारती विद्यालयों के उत्कृष्ट स्थान प्राप्त अभ्यर्थियों को सम्मानित

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को नैनीताल के पार्वती प्रेमा जगाती सरस्वती विहार में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान उत्तराखंड द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में उत्तराखंड बोर्ड की परीक्षा में विद्या भारती विद्यालयों के उत्कृष्ट स्थान प्राप्त अभ्यर्थियों को सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड बोर्ड परीक्षा में मैरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान सभी में एक नई ऊर्जा का संचार करेगा, नया उत्साह लाएगा तथा भविष्य में जीवन में आने वाली सभी परीक्षाओं में भी श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत की सनातन संस्कृति और राष्ट्रभक्ति के विचारों को आत्मसात करते हुए विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा योगदान दे रहा है। इसके स्पष्ट प्रमाण हैं कि यदि कोई भी कार्य अच्छी सोच के साथ कड़ी मेहनत के साथ निरंतर किया जाए तो उस कार्य को सफल होने से रोका नहीं जा सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष में ये कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, इस विशिष्ट कार्यक्रम में उपस्थित होना उनके लिये गर्व की बात है।

उन्होंने कहा कि देश की स्वतंत्रता के पश्चात यह अनुभव किया गया कि भारत की शिक्षा व्यवस्था को अपनी जड़ों और संस्कृति से जोड़ने की आवश्यकता है इन्हीं विचारों को मूर्त रूप देते हुए 1952 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से गोरखपुर में संस्कारी, चरित्रवान और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाने के दिव्य संकल्प के साथ पहला सरस्वती शिशु मंदिर प्रारंभ हुआ। इसी उद्देश्य से विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान का गठन हुआ। आज विद्या भारती ने भारतीय शिक्षा पद्धति और आधुनिक शिक्षा के मेल से शिक्षा जगत में नई क्रांति फैलाई है। शिक्षा के क्षेत्र में बोया गया वह एक छोटा सा बीज आज एक विशाल वृक्ष बनकर देशभर को शिक्षा और संस्कार की छांव भी दे रहा है। विद्या भारती देश भर में लगभग 13000 औपचारिक एवं 12000 अनौपचारिक विद्यालयों के माध्यम से 35 लाख छात्रों में ज्ञान, करुणा, संस्कृति और सदाचार जैसे मानवीय गुणों को उनके संस्कारों में लाने का काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि विद्या भारती द्वारा आदिवासी बहुल इलाकों, अंतरराष्ट्रीय सीमा वाले क्षेत्रों में भी सैकड़ों विद्यालय खोले गए हैं, उत्तराखंड में भी विद्या भारती का योगदान अनुकरणीय है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा विद्या भारती के सात स्कूलों को सैनिक स्कूल के रूप में स्थापित करने हेतु चयन किया गया है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने देश के भविष्य निर्माण में 70 वर्षों से अधिक समय से अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, विद्या भारती और उसके सभी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, संचालकों, आचार्यों, शिक्षक गणों को उनके द्वारा शिक्षा के जगत में है किए गए महान योगदान के लिए भी धन्यवाद दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखकर उत्तराखंड सरकार ने सर्वप्रथम नई शिक्षा नीति को उत्तराखंड में लागू करने का काम किया है, साथ ही प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को और अधिक आधुनिक और व्यवहारिक बनाने के लिए अनेक स्तरों पर सरकार नीति तैयार कर अनेक निर्णय ले रही है। उन्होंने कहा कि राज्य के सरकारी स्कूलों में कक्षा एक से लेकर 12 तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें और कक्षा एक से लेकर कक्षा आठ तक के बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के साथ जूट बैक भी उपलब्ध कराया जा रहा है। मुख्यमंत्री मेधावी छात्र प्रोत्साहन योजना के तहत मेधावी छात्रों को प्रतिभा छात्रवृत्ति भी दी जा रही है, इसके साथ ही प्रदेश के प्रत्येक विकासखंड के हाई स्कूल और इंटर में टॉप करने वाले छात्रों को भारत भ्रमण पर भी लेकर जाया जा रहा है।

स्वच्छता पखवाड़े में विजेताओं को दिया पुरस्कार

रुद्रप्रयाग। स्वच्छता पखवाड़े के मौके पर ब्लॉक सभागार में आयोजित एक ग्रंथिक कार्यक्रम में 16 ग्रामीण टीमों ने रंगोली, लोक गीत एवं नृत्य सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। इस अवसर पर विजेता टीमों को पुरस्कृत भी किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सीमान्त क्षेत्र अनुश्रवण परिषद के उपाध्यक्ष एवं राज्य मंत्री चण्डी प्रसाद भट्ट, ज्येष्ठ प्रमुख राकेश नेगी तथा खण्ड विकास अधिकारी अनुष्का द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि चण्डी प्रसाद भट्ट ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि स्वच्छता पखवाड़े में विभिन्न क्षेत्रों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं तथा आगामी दो अक्टूबर को गांधी जयंती तक यह अभियान मनाया जाएगा। ज्येष्ठ प्रमुख राकेश नेगी ने अपने संबोधन में कहा कि विभिन्न सहकारिता से जुड़ी महिलाओं द्वारा प्रस्तुतियों के माध्यम से स्वच्छता का संदेश देना एक सराहनीय पहल है। खण्ड विकास अधिकारी अनुष्का ने बताया कि स्वच्छता पखवाड़े के तहत विभिन्न गांवों में स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन सहित अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। रंगोली प्रतियोगिता में उड़ान सहकारिता, मनसूना नवकिरण सहकारिता, नारायणकोटि देवभूमि सहकारिता, फाटा सहित सभी 16 प्रतिभागी टीमों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पूर्व प्रधान प्रदीप बजवाल, जगदीश लाल, डॉ. मनीष रावत, कृषि प्रभारी भरत सजवाण, उद्यान प्रभारी हरेन्द्र सिंह पंवार, एडीओ पंचायत बलवीर लाल, मुरतकिस, बलवीर राणा, प्रेमलाल, भीम सिंह नेगी, राजेन्द्र थपलियाल, एनआरएलएम ब्लॉक मैनेजर रणजीत रावत, रीप ब्लॉक समन्वयक अरुण बुटोला, क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी ज्योति बिष्ट, व्यायाम प्रशिक्षक रेखा ढौंडियाल, उत्तम राणा, चन्द्रमोहन उखियाल, देवेन्द्र चन्द्र देवशाली, एकता पंवार, सतीश सत्कारी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं प्रतिभागी मौजूद थे।

विकासनगर में एनएच पर लगे जाम ने निकाला पसीना

विकासनगर। साप्ताहिक बंदी के बाद रविवार को बाजार खुलते ही विकासनगर शहर जाम ने जकड़ लिया। सरकारी दफ्तरों में साप्ताहिक अवकाश और त्योहारी सीजन होने के कारण बड़ी संख्या में लोग बाजार में उमड़ पड़े। इसके चलते विकासनगर बाजार में सुबह ही जाम की स्थिति पैदा हो गई। सुबह दस बजे से शुरू हुए जाम के कारण दोपहर दो बजे एनएच पर वाहन रेंगते नजर आए। एनएच के दोनों किनारों पर वाहनों के आड़े–तिरछे खड़े होने के कारण राहगीरों को भी परेशानी का सामना करना पड़ा। विकासनगर बाजार में हर दिन रहने वाली जाम की स्थिति अब लोगों के लिए मुसीबत बनने लगी है। खरीदारी के लिए बाजार आने वाले ग्राहकों से लेकर स्थानीय लोगों तक को जाम से जूझना पड़ रहा है। दरअसल जौनसार बावर और हिमाचल प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों का व्यापारिक केंद्र माने जाने वाले विकासनगर में प्रत्येक दिन सैकड़ों वाहन पहाड़ी इलाकों से सामान की खरीदारी के लिए बाजार क्षेत्र में पहुंचते हैं। इसके अलावा विकासनगर के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से भी काफी संख्या में लोग प्रतिदिन बाजार आते हैं।

टिमली में पेयजल संकट, पांच हजार की आबादी परेशान

विकासनगर। पछुवादून के सीमांत गांव टिमली में इन दिनों पेयजल संकट गहराया हुआ है। सहसपुर विधान सभा क्षेत्र के इस गांव में जल जीवन मिशन की योजना भी पांच हजार की आबादी की प्यास नहीं बुझा पा रही है। योजना के तहत बिछाई गई नई पेयजल लाइन और ओवर हेड टैंक सफेद हाथी साबित हो रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि गांव में पहले से मौजूद दो ट्यूबवेल भी अब पानी की आपूर्ति नहीं कर पा रहे। कई घरों में पानी की सप्लाई पूरी तरह ठप है, जबकि कुछ घरों में नलों से बूंद–बूंद पानी टपकता है। मजबूरी में लोग टैंकरों से पानी खरीदने या गांव से दूर उत्तर प्रदेश की सीमा से पानी की आपूर्ति कर हलक तर कर रहे हैं। स्थानीय ग्रामीण मदन सिंह, राम प्रकाश, शिव प्रजापति, राजपाल, मो. इशाक, मशकूर अली, इस्ताक अली, अजय कश्यप, परवीन, शाहिदा ने बताया कि गांव में करोड़ों की लागत से जल जीवन मिशन योजना के तहत नई पेयजल लाइन बिछाई गई, कई ओवर हेड टैंक बनाए गए। लेकिन नई पेयजल लाइन का कुछ हिस्सा वन विभाग की जमीन से होकर गुजरता है। वन विभाग की ओर से लाइन बिछाने के लिए स्वीकृति नहीं मिलने के कारण जल जीवन मिशन योजना का काम बीते दो साल से पूरा नहीं हो पाया है। जबकि पुरानी पेयजल लाइन और नलकूप जर्जर हो चुके हैं। पुरानी लाइन के क्षतिग्रस्त होने से गांव में पीने के पानी की किल्लत बनी हुई है। ग्रामीणों ने कहा कि हम दिन–रात पानी के लिए भटक रहे हैं। नई लाइन बिछाने का काम पूरा होने तक पुरानी पेयजल लाइनों की मरम्मत की जानी चाहिए, जिससे गांव में पीने के पानी की पर्याप्त आपूर्ति हो सके। बताया कि गांव में नल सूखे होने के कारण पीने के पानी के लिए ग्रामीणों को हर दिन पांच किमी दूर उत्तर प्रदेश की सीमा में जाना पड़ रहा है। उधर, सहसपुर विधायक सहदेव पुंडीर ने बताया कि जल जीवन मिशन की पेयजल लाइन को बिछाने के लिए वन हस्तांतरण की प्रक्रिया चल रही है। योजना का काम पूरा होने तक पुरानी पेयजल लाइन की मरम्मत के निर्देश जल संस्थान को दिए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने किया गढ़ी कैंट बाज़ार में व्यापारियों और आमजन से संवाद

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, रविवार देर शाम देहरादून स्थित गढ़ी कैंट बाज़ार पहुंचे। इस दौरान उन्होंने स्थानीय व्यापारियों और आमजन से संवाद किया। मुख्यमंत्री ने व्यापारियों से नए जी.एस.टी. स्लैब के बारे में सुझाव व फीडबैक लिया तथा उनसे आम जनता को घटे हुए जी.एस.टी. दरों की जानकारी देने का आग्रह किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने जनता को सीधा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से कई आवश्यक वस्तुओं एवं सेवाओं पर जी.एस.टी. दरों में कमी की है। ह्वनेक्स्ट जनरेशन जी.एस.टीह्व के रूप में शुरू की गई यह पहल जनता को राहत देने के साथ ही व्यापार और अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री ने बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों से संवाद कर कहा कि स्थानीय और स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना हर नागरिक का कर्तव्य है। स्वदेशी को प्राथमिकता देने से हमारे किसान, कारीगर और छोटे व्यापारी सशक्त होंगे। इसके साथ ही भारत की अर्थव्यवस्था और अधिक मजबूत बनेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य के लिए स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहां के स्थानीय उत्पाद देशभर में अपनी अलग पहचान रखते हैं। उन्होंने सभी से अपील की कि वे स्थानीय उत्पादों को अपनाएं और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी भी मौजूद थे।

डोईवाला बना प्रतियोगिता का ओवरऑल चैंपियन

विकासनगर। सहसपुर के शंकरपुर स्टेडियम में चल रही जनपद स्तरीय मिनी क्रीड़ा प्रतियोगिता के अंतिम दिन विकासनगर ब्लॉक के खिलाड़ियों का दबदबा रहा। तीन दिनो तक चली प्रतियोगिता में 333 अंक प्राप्त कर डोईवाला ओवर ऑल चैंपियन बना। दो सौ अंकों के साथ विकासनगर दूसरे नंबर पर रहा। प्राथमिक बालक वर्ग कबड्डी में व बालिका वर्ग खो खो में विकासनगर ने स्वर्ण पदक अपने नाम किया। जूनियर वर्ग रिले दौड़ में विकासनगर के वंश, अब्दुल, उस्मान ने स्वर्ण पदक पर कब्जा किया। जूनियर बालिका वर्ग रिले दौड़ में डोईवाला की काजल, खुशी, प्रियांशी, सोनाक्षी को स्वर्ण पदक मिला। 80 मीटर बाधा दौड़ में विकासनगर के रोहित, बालिका वर्ग में डोईवाला की काजल, बैडमिंटन एकल में सहसपुर के हर्षित, डोईवाला की आसमां ने स्वर्ण पदक जीता।

चकराता के कूणा–बागी क्षेत्र में गुलदार की दस्तक से दहशत

विकासनगर। चकराता वन प्रभाग के देवघार रेंज के अन्तर्गत ग्राम कुणा, बागी क्षेत्र में बीते कुछ समय से गुलदार की दस्तक से स्थानीय लोग दहशत में हैं। गुलदार के डर से किसान अपने खेतों में भी नहीं जा रहे हैं। ग्रामीण कई बार वन विभाग से गुलदार के आतंक से निजात दिलाने की मांग कर चुके हैं, लेकिन वन विभाग गुलदार को पकड़ने के लिए कोई कदम नहीं उठा रहा है। कूणा की ग्राम प्रधान अनिता पंवार, मैंद्रथ की प्रधान अनिता डोभाल, अर्जुन दत्त, श्याम सिंह रावत, बारू सिंह चौहान ने बताया कि कई बार त्यूणी–कथियान मोटर मार्ग पर भी गुलदार चहल कदमी करते हुए देखा गया है। गांव की सीमा में गुलदार की दस्तक से दहशत का माहौल है। दिन में हल्की सी आहट में गुलदार होने की सूचना रेंजर को दी जा रही है। सांझ ढलते ही लोग घरों में कैद हो रहे हैं। ग्रामीण बच्चों को स्कूल भेजने से भी डर रहे हैं। बताया कि आसपास के गांवों में भी गुलदार कई बार बस्तियों में दस्तक दे कर ग्रामीणों के पालतू पशुओं को निवाला बना चुका है। गुलदार की दहशत से सूरज ढलते ही लोगों का घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है।

अन्याय के खिलाफ डटकर लड़ने की प्रेरणा देता है भगत सिंह का जीवन

हरिद्वार। जिला महानगर कांग्रेस कमेटी ने शहीद–ए–आजम भगत सिंह की जयंती पर 23 मार्च पार्क में स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस दौरान गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं ने कहा कि भगत सिंह का जीवन हमें अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है।

जिला महानगर कांग्रेस अध्यक्ष अमन गर्ग और स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी प्रकोष्ठ अध्यक्ष मुरली मनोहर ने कहा कि शहीद –ए–आजम भगत सिंह की शहादत से हमें संकल्प लेना चाहिए कि जहां भी जुल्म और अन्याय हो उसके खिलाफ डटकर मुकाबला करें। पूर्व प्रदेश महासचिव वरुण बालियान और वरिष्ठ नेता मनोज सैनी ने कहा कि शहीद भगत सिंह ने जलियांवाला बाग कांड से आहत होकर देश की आजादी के आंदोलन में शामिल होकर सक्रिय भूमिका निभाई। महिला कांग्रेस शहर अध्यक्ष लता जोशी और ब्लॉक अध्यक्ष विकास चंद्रा ने कहा कि भगत सिंह ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ इंकलाब का नारा बुलंद करने का काम किया। पूर्व पार्षद पार्षद कैलाश भट्ट और पूर्व पार्षद उदयवीर सिंह चौहान ने कहा कि भगत सिंह ने शोषण वीहिन समाज की परिकल्पना की और समाजवादी गणराज्य कल्पना की थी, जिसमें सभी को बराबरी का हक मिल सके। पार्षद हिमांशु गुप्ता और सोहित सेठी ने कहा कि भगत सिंह का बलिदान हमें अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है।

आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने से पीड़ित थाने पहुंचे

हरिद्वार। कटारपुर गांव में बीते गुरुवार रात रंजिश के चलते एक युवक ने दूसरे युवक को गोली मार दी। मामले में युवक की पत्नी की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी युवक और उसके तीन साथियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। मामले में बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने परिजनों के साथ मिलकर आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की है। गुरुवार रात अर्जुन (27) पुत्र सुरेंद्र और अनुज पुत्र पपिन्द्र के बीच कहासुनी हो गई। अनुज ने तमंचा निकालकर अर्जुन पर फायर झोंक दिया। गोली लगते ही अर्जुन लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा। आरोपी मौका लेकर मौके से फरार हो गया। गंभीर रूप से घायल अर्जुन को ग्रामीणों की मदद से तत्काल जिला अस्पताल हरिद्वार ले जाया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है। अर्जुन की पत्नी मानसी की तहरीर के आधार पर आरोपी युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया था। बजरंग दल के कार्यकर्ता पथरी एसओ से मिले और आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग उठाई। एसओ पथरी मनोज नोटियाल ने बताया कि आरोपी की तलाश में दबिश दी जा रही है।

नवनियुक्त प्रदेश मंत्री गौरव पांडे का भव्य स्वागत, कार्यकर्ताओं में भरी ऊर्जा

अल्मोड़ा। भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश मंत्री गौरव पांडे का अल्मोड़ा आगमन कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों के लिए उत्साह का अवसर बना। लोधिया बैरियर पर भारी संख्या में जुटे कार्यकर्ताओं ने ढोल–दमाऊं, बैंड–बाजों और नारों के बीच उनका भव्य स्वागत किया। यहां से वाहन और दोपहिया वाहनों का काफिला होटल शिखर तक पहुंचा, जहां गरिमामय समारोह का आयोजन किया गया। होटल शिखर में आयोजित स्वागत समारोह में भाजपा महिला मोर्चा की कार्यकर्त्रियों ने पारंपरिक वेशभूषा में सजकर तिलक और पुष्पमालाओं से उनका अभिनंदन किया। जिला अध्यक्ष महेश नयाल ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि अल्मोड़ा जिले के लिए यह गौरव की बात है कि गौरव पांडे को प्रदेश संगठन में मंत्री की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली है। उन्होंने

विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में कार्यकर्ता 2027 के विधानसभा चुनाव में ऐतिहासिक विजय दिलाएंगे। अपने संबोधन में प्रदेश मंत्री गौरव पांडे ने कहा कि कार्यकर्ताओं और जनता द्वारा दिए गए आत्मीय स्वागत से वे अभिभूत हैं। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती और क्षेत्र के विकास के लिए वे पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करेंगे और 2027 में भाजपा को प्रचंड बहुमत दिलाने का लक्ष्य हासिल करेंगे। इस मौके पर कैलाश शर्मा ने कहा कि पांडे के नेतृत्व से युवाओं में नई ऊर्जा का संचार होगा और संगठन को नई उंचाइयों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। वहीं रघुनाथ सिंह चौहान ने कहा कि पांडे को प्रदेश टीम में शामिल किए जाने से अल्मोड़ा जिले को योजनाओं और संगठनात्मक कार्यों में और अधिक अवसर मिलेंगे। कार्यक्रम में महापौर अजय वर्मा, दर्जा मंत्री गंगा बिष्ट, ब्लॉक प्रमुख त्रिलोक रावत, नीमा आर्य, नगर मंडल अध्यक्ष विनीत बिष्ट, पूर्व जिला अध्यक्ष ललित लटवाल, रवि रौतेला, देवेंद्र भट्ट, निशा बिष्ट, नेहा उप्रेती, मीरा मिश्रा, बीना नयाल, प्रेम लटवाल, राजीव गुरुरानी, दीपक पांडे, आनंद भोज, सुनील कनोटक, कैलाश गुरुरानी, मनोज तिवारी, आनंद कनवाल सहित बड़ी

अथरबनी में तेंदुए की दस्तक से दहशत, वन विभाग ने लगाया पिंजरा

अल्मोड़ा। नगर से सटे ग्रामसभा अथरबनी में तेंदुए की लगातार चहलकदमी से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। ग्रामीणों का कहना है कि तेंदुआ अक्सर आबादी क्षेत्र में घूमता हुआ दिखाई दे रहा है, जिसके कारण लोग खासकर रात के समय घरों से बाहर निकलने से डर रहे हैं। बीते सप्ताह तेंदुए ने ग्रामसभा निवासी रमेश भोज के आंगन से उनका पालतू कुत्ता उठा लिया। घटना की सूचना रमेश भोज ने ग्राम प्रधान विनोद जोशी को दी, जिसके बाद ग्राम प्रधान ने तत्काल प्रभागीय वनाधिकारी दीपक सिंह से संपर्क कर स्थिति से अवगत कराया। वार्ता के बाद निर्णय लिया गया कि क्षेत्र में वन विभाग की टीम नियमित गश्त और निगरानी करेगी। इसके तहत विभाग ने क्षेत्र में ट्रैप कैमरे लगाए और तेंदुए की बढ़ती गतिविधियों को

देखते हुए शनिवार को पिंजरा लगाया गया। वन क्षेत्राधिकारी मोहन राम आर्या ने बताया कि तेंदुए की गतिविधियों पर लगातार नजर रखी जा रही है। सुरक्षा के दृष्टिगत पिंजरा लगाया गया है और ग्रामीणों से अपील की गई है कि वे अनावश्यक रूप से रात में घरों से बाहर न निकलें तथा सतर्क रहें। इस दौरान ग्राम प्रधान विनोद जोशी, रमेश भोज और वन विभाग के कर्मचारी विवेक तिवारी, नीरज, मनोज सहित अन्य लोग मौके पर मौजूद रहे।

गुरुकुल विवि और कलर्ड काऊ के बीच एमओयू

हरिद्वार। गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय और तकनीकी समाधान कंपनी कलर्ड काऊ के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस समझौते से विश्वविद्यालय के छात्रों को कंपनी में अच्छा प्लेसमेंट मिल सकेगा। कंपनी की ओर से रूपेश कुमार ने प्रतिनिधि के रूप में एमओयू पर हस्ताक्षर किए। कुलपति प्रो. हेमलता ने कहा कि यह समझौता अकादमिक और उद्योग के बीच की खाई को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने विश्वास जताया कि इस पहल से न केवल विद्यार्थियों के प्लेसमेंट की संभावनाएं बढ़ेंगी, बल्कि परिसर में नवाचार और उद्यमशीलता की संस्कृति भी विकसित होगी। प्रो. विपुल शर्मा, कुलसचिव ने कहा कि यह सहयोग विद्यार्थियों के लिए उद्योग–उन्मुख शिक्षा के अवसर बढ़ाएगा। डॉ. सुयश भारद्वाज प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट अधिकारी ने कहा कि यह समझौता विद्यार्थियों के लिए अनेकों अवसरों का द्वार खोलेगा और विश्वविद्यालय भविष्य में भी ऐसे और सहयोग स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

जिससे विद्यार्थियों की पेशेवर प्रगति और रोजगार क्षमता में वृद्धि हो सके। इस अवसर पर प्रो. मुरली मनोहर तिवारी, प्रो. मयंक अग्रवाल, डॉ. लोकेश जोशी आदि मौजूद रहे।

जयन्त
संस्थापक
नरेन्द्र उनियाल
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और
सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
द्वारा जयन्त प्रकाशन डिग्री कॉलेज रोड़, जौनपुर कोटद्वार गढ़वाल (उत्तराखण्ड) से मुद्रित तथा जयन्त कार्यालय चन्द्रसिंह गढ़वाली मार्ग, गैरसैंण, जनपद चमोली उत्तराखण्ड से प्रकाशित
RNI No.UTTHIN/2005/16338